MSS No. 431 Subject Kavya

Name of MSS Rasik Priya

Author Kesavadara Inderajeeta

Period ______ Folios 116

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios ______

(5)

रसिकप्रिया.
केशवदासकृत

431

रसिक प्रिया ; केशवदास कृत ; संपू कुमार इन्द्रजीत का लिखा ॥ १२ सावन शुक्ल पक्ष १८६५ वि० लि०

५८ पत्रक ॥ ल० म० २० पं० प्र० पृ०

हे० ले०

(4)

431

रसिकप्रिया
केशवदासकृत

॥श्रीगणेशायनमः॥अथरसिकप्रियालिख्य
ते॥एकरदनगजबदनसदनबुधिमदनक
दनसुत॥गवरिनंदआनंदकंदजेगवंदव
रजुत॥सुभदाइकदाइकसुकिरतिगनना
इकनाइक॥बलधाइकघाइकदरिद्रसब
नाइकलाइके॥गुरगुनअनंतभगवंतभव
भगतिवंतभवभयहरन॥जयकेसवदास
निवासनिधिलंबोदरअसरनसरन॥१॥
॥छप्पै॥श्रीवृषभांनकुमारिहेतसिंगा
ररूपभय॥वासहासरसहरेमातुबंधनक
रुनामय॥केसीप्रतिअतिरुद्रवीरमार्यो
वत्सासुर॥भयदावानलपानपियोवीभ
त्सवकौडर॥अतिअद्भुतवंचिविरंचिमति
सांतसंततसोचिचित॥कहिकेसवसेवहु
रसिकजनननवरसमैंव्रजराजनित॥२॥दो
हा॥नदीवेतवैंतीरतहंतीरथतुंगारन्य॥
नगरओडछोविहुवसैंधरनीतलमेंध
न्य॥३॥अप्रमचारिविसेतहंचारिवर्णसु
भकर्म॥तपजपविद्यावेदविधिसवैंवटध
नधर्म॥४॥अपनेंअपनेंधर्मतेंसवैसरासु
बकारि॥जासौंदेसविदेसकेसवैरहेंन्र

र. प्रि.
2

पहारि ॥ ५ ॥ रच्यो विरंचि विचारि तिहं नृपम
नि मधुकर साहि । गहिरवार कासी सुरवि
॥ १ ॥ कुल मंडनु जस सुजा हि ॥ ६ ॥ ताको पुत्र प्रसि
द्ध महि मंडनु दूलह रामु । इंद्रजीत ताको
अनुज सकल धर्म को धामु ॥ ७ ॥ दीनी ता
हि नसिंहजू तन मन रन जय सिद्धि । हिल
मील स्मरत राम ज्यों भई राज सी वृद्धि ॥ ८ ॥
तिनि के विकेसवदास सों कियो धर्म सों
नेहु । सव सुख दै करि यह कह्यो रसिक
प्रिया करि देहु ॥ ९ ॥ संवत सोरह सैं वरस
वीतें अठतालीस । कातिग सुदि तिथि स
प्तमी वार वरनि रजनीस ॥ १० ॥ अति रति म
ति गति एक करि विविधि विवेक विलास ।
रसिकनि कौं रसिकप्रिया कीनी केसवदास
॥ ११ ॥ ज्यों विनु डीठि न सोभिये लोचन लोल
विसाल । त्यों ही केसव सकल कवि विनु वा
नी न रसाल ॥ १२ ॥ तातें रुचि सौं सोधि पचि
करि ये सरस कवित्त । केसव स्याम सुजान कौं
सुनत होइ वस चित्त ॥ १३ ॥ अथ नवरस लक्ष ॥ १ ॥
नं दोहा ॥ रति मति की अति चातुरी रति पति
मंत्रु विचार । ताही सों सव कहत हैं कवि

कोविदसिंगार॥१६॥सुभसंयोगवियोगएदुहूं
सिंगारकीजाति॥पुनिप्रछंनप्रकासकरिसे
कहैदैभांति॥१७॥अथप्रछंनसंयोगसिंगार॥
सोप्रछंनसंयोगकविकहैंवियोगप्रमान॥जा
नैंपीउप्रियाकीसखीहेतजुतिनहिसमान॥१८॥
॥यथा॥वनमैंवृषभानकुमारिमुरारिरमैंह
विसोंरसुरूपुपिये॥कलकूजतपूजतकामक
लाविपरीतिरचीरतिकेलिकियें॥मनिसोमि
तस्यामअराइजरीअतिचौकीचलैंचलचाह
हियें॥मखतूलकेंफूलाफुलावतकेसवभानुम
नौंमनिअंककलियें॥१९॥अथप्रकाससंयोग
सिंगारलछनं॥दोहा॥सोप्रकाससंयोगज्यु
हकहैंप्रकासवियोग॥अपनैंअपनैंचित्तमैं
जानैंसिगरेलोग॥२०॥यथा॥केसवएकसमैं
हरिराधिकाआसनएकलसैंरसभीनैं॥आन
दसोंप्रियआननकीदुतिदेखतिदर्पनसोंदृग
दीनैं॥मालकेलालमैंबालविलोकितहीभरि
लोलनलोचनलीनैं॥सासनपीयसवासन
सीयकुतासनमैंअनुआसनकीनैं॥२१॥राधि
काकोप्रछंनवियोगसिंगार॥यथा॥कीटजौंका
टतौकांनतिकांनसोमानकुमैंकहिआवतुऊ
नौं॥नाहिचलैंसुनिकैंवपहूरहेनाकैंहीके

र० प्रि० सबातकुनहूनौं। नैंकुअटैंपटफूटतिआंखिसु
५ द्रुमतिद्वैकवकोव्रजसनौं। काहेकोंकाहूकौंकौ
॥२॥ जैंपरेखोवजीजैंरीजीवकीनाकदेखनौं॥२२॥
॥राधिकाकोप्रकासवियोगयथा॥ सीतलसमी
रसखिंमस्वंद्रिकानिवारिकेसोसासमैंसेंहाते
हरखुहिरातुहैं। फूलनिपैंलाइअरिमारिआरि
घनसारचंदनकौंदाहबिनुचौगुनोंघिरातुहैं॥
नारहलनमानमुरझाइजीवैंनारहीपैंधारकेधि
रकैंकेहाथीआनुधिरातुहै। पाईहैंतेपीरकिधों
योंहीउपचारकरैंआगिकोतोऔरोंऔगुआ
जिहीघिरातुहैं॥२३॥कृस्नकोप्रछंनवियोगयथा॥
केसवकहिरचोतुमहीसोंकिधोंभयकाहूकैंभी
तुभयोहै। वेऔहैंकाहूकेंहाथकिनाथकिधौं
तुमकाहूकेंसाथरयोहैं। मेरीसोंमोसकूमान
कूवेगिकहामनुनाहिकेहापरयोहैं। सांचाक
हौंहरिहास्योहैंकाहूसौंकाहूहस्योकिहरा
गयोहैं॥२४॥कृस्नकोप्रकासवियोगसिंगार
यथा॥ बातकहैंनसुनैंकछुकाहूसोंहेरैंनही
कोऊकेंसैंहूहेरैं। नाहकेछूनपियेंकछुकेसव
औनछुवैंकरकोंरोकरैरैं। हूलिउठीव्रजबैरी ॥२॥
कहाउठिआवहिवेगिकह्योकरिमेरौं। जानें
कोमाईकेहाभयोकान्हकौंयोगसंयोगवि

5 जोगछितेरसैं ॥२५॥ दोहा ॥ योंप्रछंनप्रकाससब
बरनेजोगवियोग ॥ अबनाइकलछनकहैं ग
टअगटप्रयोग ॥२६॥ इतिश्रीमनमहाराज
कुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां
संयोगवियोगप्रछंनप्रकाससिंगारवर्ननंप्र
थमप्रभावः ॥१॥ अथनाइकवर्ननं दोहा ॥
अभिमानीत्यागीतरुनकोकिलकलानिप्रवीन
भव्यछमीसुंदरधनीसुचिरुचिसदाकुलीन ॥१॥
एगुनकेसवजासुमेंसोइनाइकुजानि ॥ अनुकू
लदछसठधृष्टपुनिचौविधिताहिवखानि ॥२॥
॥ अथअनुकूललछनं ॥ प्रीतिकरैनिजुनारि
सोंपरनारीप्रतिकूल ॥ केसवमनवचकर्मकरि
सोकहियेअनुकूल ॥३॥ प्रछंनअनुकूलयथा ॥
औरकेहासविलासनभावतसाधनिकोंयह
सिद्धसुभावैं ॥ बातवहैंजुमसानिवहैंहरिकोउ
कहूँकछुसोधुनपावैं ॥ आसनवाससुवासन
भूखनकेसवक्योंहूँयहैंधनिआवैं ॥ सोविनुपा
नजुपातनकेसववैंनकिधोंयहप्रीतिकहावैं ॥४॥
॥ प्रकासअनुकूलयथा ॥ केसवसएकविलोचन
सखीविलोकनिकोंअवलोकैसदाई ॥ सखियैंवा
तसुनेंसमुझेंकहिआवतिसखीयैंवातसुहाई ॥
सखीसीहांसीसुधानिधिसोमुखसोधिलईव

सुधाकीसुधाई।सधेसुभाइसबैंसजनीवस
कैसेंकियेअतिटेटेकन्हाई।५॥यथा॥मे
॥३॥ रेतोनाहिनेंचंचललोचननाहिनेंकेसबवा
नीसुहाई।जानोंनभूषनभेदकेभाइनिभलि
हमैंनाहिभोंहचलाई।भोरेंहूनांचितयोह
रिओरसोंधेंककरैंइहिभांतिजुगाई।संच
कतोंचतुराईयोंचितनकान्हभावकाहे
तेंमाई।६॥दक्षनलक्षनदोहा॥ज्यों हिय
सोंहियपहेतुउकसमजवडाईकानि।चित्तव
लैंहूनाचलैंदछिनलछनजानि।७॥प्रछंन
दछिन॥यथा॥हरिसेहितसोंअमुभलिह
मकीजेंमनुहांतोकरिहियहूतेंहेतहितहा
निये।लोकमेंअलोकुआंनिनाकेहीकोंलाग
तुहैंसीताजकोंहूतगीताकेसेंउरआनियें।
ज्योंबिनिजुरेबिपतुसोईसांचीकेसोरसमां
ननिकीसुनीसांचीकवहूंनमानियें।गोकुल
कीकुलटाएयोंहीउलटावतिहैंआपुलोंतो
वैसेंईहैंकाल्हिकीनजानियें।८॥प्रकास
दछिनयथा॥चितचोंपचितैवेकीतेंसाचें ॥३॥
हैंअहतेंसीपेंभांतिउरातघनें।अहतेंसेंई
कोमलबोलगुपालकेमोहतहेंतिहिंभांतिमनें।

7 गुन तें सेई हास विलास सवै कुतै जे सेई के सव
कों नुगनें । सवी तें कहैं आन वधू के अधीन हैं
सा परती के किधों सपनें ॥ ९ ॥ यथा ॥ वहि
तरगट अगट निरंतर काम कलाकुल कों नुगनें ॥
कहि के सव हास विलास सवैं कुति धों सवटै
र सरी तिसनें । जिनि कों जि उमेरें हा जी पजिये
साछि कायमनो वच प्रेम घनें । तिनि सों कहैं आ
न वधू के अधीन हैं सा परती के किधों सपनें ॥ १० ॥
॥ सठलछन दोहा ॥ मुह मीठी वातें कहैं निपट क
पट जियजानि । नाहि नडर अपराध को सठक
रिता हिवखानि ॥ ११ ॥ पृछंन सठ यथा ॥ रुचि पं
कज अंवर नवंदन कंचन रंचन रोचन हू की वची ।
कहि पैकहि हिकारन को इतें लाइ के कापर भांति
निभों रचनची । उनमान तुहों अछिजाल विलाल
नाहि नें रति की रोछ रची । तनु तेरे वियोग तच्यौ
तरुनी तिहि मान कुमो हिय मांह तची ॥ १२ ॥ अ
थ प्रकास सठ यथा ॥ कोंन निके रंग रंगनें न निके
डोलो संग ना सा अंगा रस नाके रस हीं समाने हैं ॥
औ कगट कहा कहों मूट हों ज जानि नाहु प्रो
ट कूट के सो दासन कें करि माने हों । तन अं नम
ने आन कपट निधान कान्ह सांची कहै मेरी
आन का हे तें उराने हो । वे तो है विकानी हाथ

र.प्रि. मेरें होति हारें हाथ तुम ब्रजनाथ हाथ कौंन
8 कें बिकाने हौं ॥ १३ ॥ धष्ट प्रछन्न दोहा ॥ लाजन
गारी मारिबी छोड़ि दए सब त्रास । देष्यो सोधु
॥४॥ न मानई धष्ट वरनियै तास ॥ १४ ॥ प्रछंन धष्ट
यथा ॥ नेह भरे लैं लैं भाजत भाजन कौं नुगनैं
दधि दूध मठा ए । गारि दियें तें हसैं घर जैं घर आ
वत हैं जनु बोलि पठाए । लाज की ओक कहा क
है केसव जे सुनियें ते सबैं गुन ठाए । मां मी लियें
इनि को मेरी माई कों हैं हरि आठहू गांठि हठाए ॥
॥ १५ ॥ अथ आठ गांठि नाम दोहा ॥ मनसा वाचा
कर्मना विहसनि चितवनि लेषि । चलन चातुरी
आतुरी आठौ गांठि विसेषि ॥ १६ ॥ प्रकास धष्ट
यथा ॥ सौंह को सोचु सको चुन पांच को डोलत सा
ङु भरा करि चोरी । बैंन निबंध कताई रची रति नें
न निकें संग डोलत डोरी । लाज करें न डरें हितहां
नि ते आंनि मरैं त्रिय जानि कें भोरी । नाहि नें कें
सव साधु जिन्हें बकि ओसे निसौं दुषु वे मुषु को
री ॥ १७ ॥ दोहा ॥ वरन्यो कवि नाइक सबै नाइ
का हित अनुसार । सब गुन लायक नाइका सुनि
अब कौतुक प्रकार ॥ १८ ॥ इति श्रीमन्महाराज ॥४॥
कुमार श्री इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रिया
यां चतुर्विधि नायक प्रछन्न प्रकास वर्ननं द्विती

१ पप्रभाव॥ २॥ अथनाइकाजातिवर्ननंदोहा॥
प्रथमपद्मिनीचित्रिनीजुवतीजातिप्रमान।
बहुरिसंखिनीहस्तिनीकेसवराइसुजान॥ १॥
॥अथपद्मिनीलछनं॥ सहजसुगंधसुरूपसुभसु
अप्रेमसुषदानि।तनुतनुभोजनुरोसरतिनिद्रा
मानुवषानि॥ २॥ सलजसुबुद्धिउदारमृदुआ
सवाससुचिअंग।अमलअ[illegible]लोमअनंगाम्
पद्मिनिनिहाटकरंग॥ ३॥ ॥यथा॥ हसतिकहति
बातफूलसेझरतजातगूढभरिहावभावकोभ
रीसीकोरिका।पन्नगीनगीकुमारिआसुरीसु
रीलिहादिअरैंधारीकिंनरीनरीगवांरिनारिका॥
तापैंहोंकहांहूंजोंउवलिजोंउकेसोराइरची
विधिएकव्रजलोचनकीतारिका।भौंरसेभव
तअभिलाषलाषभांतिदिव्यचंपेकीसीकली
वृषभानकीकुमारिका॥ ४॥ ॥चित्रिनीलछनंदो
हा॥ नृत्यगीतकवितारुचैंअचलचित्तचलदृष्टि।
बहिरतिअतिरतिसुरतमधुजलसुगंधकीसृष्टि।
॥ ५॥ विरललोमतनमस्नागहभावतसकलसुबा
स।मित्रचित्रप्रियचित्रणीवरनंकेसवदास॥ ६॥
॥यथा॥ बोलिबोबोलननिकौंसुननिबोअवलोक
निकेअवलोकनिजोते।नाचिबोगाइबोबीनब
जाइबोरीझिरिझाइकोजानतुतोते।रागविराग
निकेंपरिरंभनहासबिलासमनितेरतकोते।तो

र॰ प्रि॰ 10 मिलितौंहरिमित्रहिकोंसषिऐसेचरित्रजो
चित्रमेंहोते॥ ७ ॥ अथसंषिनीदोहा ॥ कोपसी
॥५॥ लकोविदकपटसजलसलोमसरीर ॥ अरुन
वसननषदानरुचिनिलजनिसंकअधीर ॥
॥ ८ ॥ षारगंधजुतमारजलतप्रभरिभगाहोइ ॥
सुरतारतिअतिसंषिनीबरनेऊकविजन
लोइ ॥ ९ ॥ यथा ॥ जोतुनहीकदलीकीगली
नभलीविधिलेंवदरीमुहलावें ॥ चाहेंनचंप
कलीकीथलीमलिनीनलिनीअरीदिसाऊन
धावें ॥ जोकोऊकेसवनागलवंगलतालव
लीअवलीनिचरावें ॥ बालिकेसाषबबाइ
मरैंकोऊकंटहिकेंटकटेरोईभावें ॥ १० ॥
॥ हस्तिनीलछनदोहा ॥ स्थूलअंगुलीचरन
मुषअधरभ्रकुटिकटिबोल ॥ मदनसदन
रदकंधराभंदचालिचितलोल ॥ ११ ॥ स्वेदमद
नजलदुरदमदगंधितभरेकेस ॥ अतितीछ
नवकुलोमतनभनिहस्तिनिइहिंभेस ॥ १२ ॥
॥ यथा ॥ सबदेहभईदुरगंधिमईमतिअंधदई
सुपुपावतकेसें ॥ कछुमालतेलोमविसालस
हेश्रुतिताडनकेसवबोलअनेसें ॥ अलिज्यों ॥५॥
मलिनीनलिनीतजिकैंकरिनाकेंकपोलनि
मंडिततेसें ॥ छितिछोडिकैंराजसिरावसपा
पनिरेपदराजविराजतजेसें ॥ १३ ॥ दोहा ॥

॥ तानाइककीनाइकागंथनितानप्रमान॥स्वकी
यापरकीयाअवरस्वीयापरकीआन॥१४॥अ
थस्वीयालछनं॥संपतिविपतिजुमरनहूसदा
एकअनुहारि॥ताहिस्वकीयाजानिजहूमनक्र
मवचनविचारि॥१५॥अथस्वीयाभेद॥मुग्धा
मध्याप्रौढागतितिनिकीतीनविचारि॥एकएक
कीजातिजुचारिचारिअनुहारि॥१६॥अथ
नववधमुग्धा॥नवलवधूनवजोबनानवलअ
नंगानाम॥लज्जालियेंजुरतिकरेंलज्जाप्रायसु
वाम॥१७॥अथनवलवधूमुग्धालछनं॥तासौं
मुग्धानववधकहतसयानेलोइ॥दिनदिनदु
तिहूनावटैंवरनिकहैंकविकोइ॥१८॥यथा॥
मोहिवोमोहनकोगतिकोगतिहाथपटावेंनक
हाथैंपटैंगी॥नैननिकीगतिगूढचलाचल
केसबसासमकोसचटैंगी॥ओपउरोजनिकी
उपजैंदिनभाहेंमटैंअगियानमटैंगी॥माई
कहांपरमाइगोरापतिमोंदिनद्वैइकहिंभांति
वटैंगी॥१९॥अथनवयौवनभूषितामुग्धादो
हा॥सोनवजोवनभूषितामुग्धाकोंपरवेस॥
बालरसातिनकसेंनहोंजोवनकोपरवेस॥२०॥
॥यथा॥केसवफूलिनचीभकुंदीकेटिलटि
नितंबलईवहूकोली॥वेंननिसोबुसकोवु
मुनेंनतिघूटिगइगतिकीचलचाली॥घों

र॰ वि॰ 12 मुकुधीरथसैंनथरसैंअवलैंतुमकोंमिलअंचन
माली। वाकोअयाननिकासनकोंउरआवैहै
जोवनकेअपताली ॥२१॥ नवलअनंगामुग्धाल
॥ ६ ॥ छनंदोहा॥ नवलअनंगाहोइसोमुग्धाकेसवर
स। बोलैंबोलैंवालविधिरसैंअसैंसविलास॥२२॥
॥यथा॥ चंचलनहूजैंनाथअंचलुनछैंचोहर
थसोवैंनैंकुमारिकाऊंसुकुतोसुवापोज। मंदक
सैंरीपछुतिचंडमुग्धुरैबिपतुसोतिकैंडराइआ
ऊंघारत्योंछिपायोज। मृगजमरालबालवाहि
रैविउरिदैंडभायोतुम्हैंकेसवसोमोहूमनभायो
ज। थलकेनिवासअसेवकवनविलासमुनिसों
गुनोसुरतहूतेंश्यामसुषुपायोज॥२३॥ लज्जाप्रा
यरतिमुग्धालछनंदोहा॥ मुग्धालज्जाप्रायरतिव
रनतकविहरहिंरीति। करैंसुरतिअतिलाजसौं
पतिहिंवढावैंप्रीति॥२४॥ यथा॥ बोलीनहोंवे
तुलाइरहेहरिपाइपरेअरुबोलीपैंबोली। के
सवभेहिवेकोंभरिअंकछुडाइरहेजकमेंचैंनछो
डी। सखेंचितैंचकोंकैतोकियोसिकचांपिउढाइ
अगरलिनेढोडी। मैंभरिविचितुतऊचितयोनरही
गहिवैनिलाजनिगोडी॥२५॥ मुग्धाकौसयनु ॥ ६ ॥
लछनदोहा॥ मुग्धासोहूरहैंनहिपायसंगसुन
ऊसुजान। जोकोंहूसोवैंसखीसुनहिताहिसमान॥

13

॥२६॥ यथा॥ पाँइ परैं मनुहारि करैं पलिका पर
पाइ दियो भय भीनें। सो हग दैके हिंके सब के सें
हूं कोरि हिंकोरिक सौंह निकीनें। सो रस मुक्कें मुख
सौं मुख च्वै छिन मैं हरि मानि सबैं सुख लीनें॥
एक उसास ही कैं उससैं सिगरेई सुगंध विसाकरि
दीनें। २७॥ मुग्धाको सुरत दोहा॥ मुग्धा सुरत क
रैं न हीं सपनें हूं विषमानि। छलनवलकावैं हो
ति है सुख सोभा की हानि। २८॥ यथा॥ सुख दैस
बी नि वसबैं कैं सोंह धाइ कैं बवाइ कछु साइव
सकी नीवी खसु है। कोमल मनालिका सी मल्लि
का की मालिका सी बालिका जु डार मीडि मानसु
किपसु है। जानैं न विभातु भयो कै सब सुनैं कोवा
तरबो आनि गातु जातु भयो किधौं अमसु है। छवि
सी जु राधा पहचित्रनी छिचित्र गतिक हो धौं नाग
रसिक यामैं कौं नुरसु है। २९॥ मुग्धाको मानु दोहा॥
मुग्धा मानु करैं न हा करैं तो सुनकूं निदानु। पाँउर
पाइ यु उइजैं औं डर पै अपानु। ३०॥ यथा॥ बो
लैं न बालब लाबत हूं न बरे बलि बैं भुव प्रेम परे
बौं। आपनों हाथ विलोकि विलोकि कछो तब के
सब बुद्धि विसेबौं। छोटी बडी विधिरें बलि बीजु
ग आपु की रेख सु कौं न जु लेबौं। प्रेमतें बोलु स
खो नप स्यो अकुलाइ कै खोपी यकेंसी हेरे बौं॥
॥३१॥ इति मुग्धा॥ अथ मध्या लछनं दोहा॥ म

र॰प्रि॰ धा अरु आरूढजोवना प्रगल्भवचना जांनि ॥ प्रादुर्भू
14 तमनोभवा सुरत विचित्रा मांनि ॥ ३२ ॥ मध्या आरू
॥ ७ ॥ ढजोवना ॥ मध्या आरूढजोवना पूरनजोवन
वंत ॥ भाग सुहाग भरी सदा भावति है मन कंत ॥ ३३ ॥
॥ यथा ॥ चंद कोसो भाग भाल भृकुटी कमांन कैसो
मैंन कैसे पैंने सर नैंननि विलासु है ॥ नासिका
सरोज गंधवाह से सुगंधवाह दारयौ से दसन कै
सो बीजुरी सो हासु है ॥ भौंर कैसी गीव भुजपान
सो उदरु अरु पंकज से पाइ गति हंस कैसी जासु है
॥ देखी है गुपाल एक गोपिका में देवता सी सो
ने सो सरीर सब सौंधे कैसी वासु है ॥ ३४ ॥ प्रग
ल्भवचना मध्या दोहा ॥ प्रगल्भवचना जानि
तिहि वरनत कवि सब राम ॥ वचन निमाफ उराहने
देइ दिखावै त्रास ॥ ३५ ॥ यथा ॥ कौंन है भले जुभ
ले ढंग लागे भले हू है नैंननि के रंग रागे ॥ जौंन
तिहौं सब हौ तुम जानत आपुस के सब लोल ब
लागे ॥ जाउ न हाल अहो जाउ चले हरि जात न ति
न्हीं वनि वागे ॥ देखि कहा रहे पीछे परे उ
पटके से देखि बिबदे पाउ आगे ॥ ३६ ॥ अथ प्रा
दुर्भूतमनोभवा मध्या दोहा ॥ प्रादुर्भूतमनोभवा
मध्या कहौं बखानि ॥ तन मन भरि बित सों भिदें कै ॥ ७ ॥
सब काम कला जानि ॥ ३७ ॥ यथा ॥ आजु मैं देखी
है गोपसुता इक हौ इन कैसी अहार की जाई ॥ दे

15 छतछीरहियैंदुतिदेहकीदेखेतैंऔरनदेषीसु
हाई॥एकहीवंकविलोकनिऊपरवारोंबिलो
कनिलोकनिकाई॥केसवदासभलानिधि
सोवहबूझियैंकामुकिमेरोकहाई॥३८॥अ
थसुरतविचित्रामध्यादोहा॥अतिविचित्रसुर
तासुतौजाकोसुरतुविचित्र।बरनतकविकुलकौं
कहिनसुनतसुहायोमित्र॥३९॥यथा॥केसो
दाससविलासमंदहाससजुतअवलोकनिअला
पनिकोआनंदअपारहै।बहिरतिसातपुनि
अंतररतिसातसुनिरतिविपरीतनिकौंबिबि
धविचारहै।छूटिजातलाजजहंभूषनसु
रंगछूटिजातहारसबमिटतुसिंगारहै।कूजि
कूजिउठैरतिकूजतनिसुनिषगसोईतोसुर
तुसचित्रमोहव्यवहारहै॥४०॥बहिरतिदो
हा॥आलिंगनुचुंबनुपरसुमर्दननषरददान॥
अधरपानसौंजानियेबहिरतिसातसुजान॥
४१॥अथअंतररति॥थितितिर्यकसनमु
षविमुषअधऊरधउत्तान।सातअंतररतिस
मुझियोकेसवदासप्रमान॥४२॥अथसोरह
सिंगारयथा।प्रथमसकलसुचिमंजनअमल
बासजावकसुदेसकेसपासकोसुधारिबो।
अंगरागभूषनविविधमुषबासरागकज्जल

र०प्रि०
16
॥ ८ ॥

कलितलोललोचननिहारिबो ॥ बोलनिहस
निमृदुबलनिबाहपलपलप्रतिपतिव्रतप्राति
पालिबो ॥ केसोदासससविलासकरहुकुंवरिराधे
इहिंविधिसोरहूसिंगाररनिसिंगारिबो ॥ ४३ ॥
॥ अथसुरतांतवर्णनंयथा ॥ सुंदरतापयपाव
कजावककपीकेहिंयेनखचंदनरहे ॥ चंदन
चित्रसुधाविषअंजनदूरिसवैंमतिहारगये
हैं ॥ केसवनैननिनीरसमईमदिरामरघमत
मोहमयेहैं ॥ केलिकेनागरिनागरप्रातउ
नागरसागरभेषभयेहैं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ स्विग
रीमध्यातीनिविधिधीराश्रोरअधीर ॥ धी
राधीरातीसरीवरनतहैंकविधार ॥ ४५ ॥
॥ अथधीराभेद ॥ धीराबोलैंवक्रविधिवां
नीविषमअधीर ॥ पीयसोंदेइउराहनोंसो
धीराननअधीर ॥ ४६ ॥ अथमध्याधीरायथा ॥
जौंजौंहुलाससोंकेसवदासविलासनिवासु
हियेंअवरेख्यो ॥ त्योंत्योंवढ्योउरकंपुकछ
भ्रमुभीतुभयोकिधौंसीतुविसेख्यो ॥ मुद्रित
होतसबीवरहामेरेनैनसरोजनिसाचुकैले ॥ ८ ॥
ख्यो ॥ तेंमुकयोमुखमोहनकोअरविंदसोहै
मुतोसंदसोंलेख्यो ॥ ४७ ॥ अथमध्याअधीरायथा ॥

17

तातकोसोगातसबबानबलबीरकोसोमात
कोसोमुकुमहामोहिमनभायोहैं। थलसों
अचलसालेअनिलसेंचलचित्तजलसेंअम
लतेजतेजकोसोगायोहैं। केसोदासबसत
अकासकेप्रकासघोषघटघटघरघरघैंफ
घनोंछायोहैं। रतिकोसोरतिनाथरूपराति
नाथकोसोकहेकेसोराइरूठुकौंनपहिपा
योहैं। ४८ ।।मध्याधीराधीरायथा।। कान्हभ
लेजूभलीसमुझाईहैंमोहसमुद्रकोज्योंउम
ह्यौंहै। केसबआपनोंमानिकसोमनुहाथ
परोंऐसेंकौनेंलह्योहै। नैंननिहारिमिलिबो
करियैअबबैननिकोमिलिबोतोरह्योंहै।।
गाइकेंह्योतुमजेसोंसबीसोंऐसेंहेगुपाल
मैंऐसोकह्योहै। ४९ ।।इतिमध्या।। अथप्रौ
ढालछनसोहा।। सुनिसमस्तरसकोविदाविचि
त्रविभ्रमाजाति। अतिआक्रामितनाइकाल
ध्यायतिसुभांति। ५० ।।अथसमस्तरसको
विदाप्रौढा।। सोसमस्तरसकोविदाकोविरक
हतबखानि। औरसुभावेंप्रीतिमेंताहारसकी
हानि। ५१ ।।यथा।। देखीहैंगुपालएकेंगोपि
काअनपमरूपसोंनेतैंसलोनावासुसोंधेते

र० प्रि० सवाई हैं। सोभा हास सुभाइ अवतो फलियो घन
18 स्याम किधौं पहरामिनी यौं कामिनी हुं आई हैं ॥
॥९॥ देवी कोऊ दनवीन मानवीन हे इ ऐसी भांन
वीन हू भाव भारती पढाई हैं ॥ केसो दास सस
व सुख साधन की सिधि प्रह मेरे जान मैं नही
सों मैनका की जाई हैं ॥ ५२ ॥ अथ विचित्र वि
भ्रमा प्रौढ दोहा ॥ अति विचित्र विभ्रम सरस
प्रौढ प्रगट बषानि ॥ जो कीरे पति हू ति कौ
प्रिय ह मिलावैं आनि ॥ ५३ ॥ यथा ॥ हे गति
मंद मनोहर के सब आंनन चंद हियें उलहे हैं ॥
भौंह बिलासनि कोमल हासनि अंग सुवास
नि गाढे गहे हैं ॥ बंक बिलोकनि कौं अवलोकि
सुमार हू नंद कुमार रहे हैं ॥ एई तो काम के बान
कहावत फूलनि के विधि भलिक हे हैं ॥ ५४ ॥
॥ अथ आक्रमित नाइका प्रौढ दोहा ॥ अति
आक्रामित नाइका प्रौढ कहि है चित ॥ मनसा
वाचा कर्मना जिहि वस कीनौं मित्त ॥ ५५ ॥ य
था ॥ तो हित गाइ बजावत नाचत वार अनेक ॥९॥
सिंगार बनायो ॥ जी हू मैं आंन कौं आनि वो घ्या
ग्रोपै तेरोत ऊन भयो मन भायो ॥ भावैं सुतकै
रि बोकरि भांमिनि भाग बडे बस तैं करि पायो ॥

कान्हलोंमधेंजुवारतिनाहिंसुवारतिहेंस्त्र वषाइलगायो॥५६॥अथलब्धापतिनायकं दोहा॥सोलवधापतिजानिजेंकेसवप्रगटप्र मान॥कानिकरेंपतिकुलसवेंप्रभुताप्रभुहिस मान॥५७॥यथा॥आजुविराजतहेंकहिकेसव श्रीव्रजभांनकुमारिकेन्हाई॥वानीविरंचिवधूहि कैमकामरत्वीजुरतीसुवधूनिवनाई॥अंगवि लोकि त्रिलोकमेंअैसीकोनारिनहीजिहि नारिनवाई॥मूरतिवंतसिंगाररसमेंपिविसिंगार कियेंजनुसुंदरताई॥५८॥दोहा॥आरसमाझ अनाररहिप्रगटकरेंहितुहोइ॥आकृतिआ पुकुसवईप्रौढधीरासोइ॥५९॥अथधीरा धीराप्रौढा॥यथा॥आवतदेखिलियेउठिआ गेंहूकेसवआपुहींआसनुदीनों॥आपुहींपा इपवारिभलेंजलपान्योंकोभाजनुलाइनवीनों॥ वीरावनाइकेंआगेंधरेजववेहरिकोंकरवी जनुलीनों॥वांहगहीहरिऔसेंकह्योहसिमें तोहूतोअपराधुनकीनों॥६०॥अथप्रौढा धीराआकृतिगुप्तायथा॥चितवोचितवांकोअै हँसोऔरहसोतेधुलायतेंवोलोरहोनितमोनें॥ सोंहअनेकनिआवरूँऔंककरोंरतिकोंप्रति रेंनिकीसोनें॥बवांऔतेंबाडूवल्योंऔंविरी

र॰ प्रि॰ जनआईहोंकेसबआनुहगौनें ॥ मोहनकेम
20 नमोहिवेकौंमुकेहैंपरह्यौंसिषईसिषकौ
नें ॥ ६१ ॥ अथउत्तरप्रत्युत्तरंयथा ॥ हितुकेंइ
॥ १० ॥ तदेषऊरेष्योसबैंहितवातसुनौंजसुनीसब
हीहैं ॥ यहतोकछुऔरवहैंसबहल्यरसोक
रोजबकरीजुतहाहें ॥ समुझाइकेहौंसमुझाह
मकेसबऊठीसबैहमसोंजुकहीहें ॥ मानुकि
योअपमानुकरेंतोहसौंअबकैहसिवेकौं
रहीहें ॥ ६२ ॥ अथप्रौढअधीरालहा ॥ पति
ञाति कौंअपराधुगनिहितुनकहेंहितुमानि ॥
कहतंअधीराप्रौढतिहिकैसबराइबषानि ॥
॥ ६३ ॥ यथा ॥ हैंसिषुवाइसिषाइरहीसिष
सीवेनासिषतैंहूसिषाई ॥ मैंबऊतेउपुपाइ ५
हूरेष्योपैकेसबक्यौंहूकुटेवनजाई ॥ रंडहि
यैबिनुसाधनिहूसंगछूटतिक्योंबलकोबल
ताई ॥ रेषऊरेमधुमीपुटकोटिमिटैंनघटै
विषकीविषताई ॥ ६४ ॥ अथप्रौढधीराधीरा
लहा ॥ मुषस्पौवातेंकहेंजियमेंपीयकोभय
धीराधीराजोलिषैजैसीमोरठऊष ॥ ६५ ॥ यथा ॥ ॥ १० ॥
हौंमनमेलेनजोलौंकछूअबछाडऊबोलि
वोबोलऊमोंहैं ॥ केसबऔरनिसोंरसरास
रस्योरसबाऊसबैहमसोंहें ॥ रेषऊयोंदक

वारसकोस्वनआरसलोचनआरसीसौंहैं। आए
गवहूँसेईसाजसौंआजुसुभलिगईपीयकालि
कीसौंहैं। ६६ ॥ इतिस्वकीया ॥ अथपरकीया
॥ दोहा ॥ सवतेपरपरसिद्धजगताकोप्रियाजु
होइ। परकीयातासौंकहेंपरमपुरानेलोइ। ६७ ॥
॥ अथपरकीयाभेददोहा ॥ परकीयाद्वैभांतिपु
निऊढाअरुअनऊढ। जिनहिदेषिसुनिहोतवस
संततमूढअमूढ। ६८। ऊढाहोइविवाहिताअ
विवाहिताअनऊढ। तिनिकेकहोंविलाससव
सवगूढअगूढ। ६९ ॥ अथऊढायथा ॥ वैठीस
षीनिकीसोभैसभासवहीकेंसुनैंननिमाझ
वसैं। पूछेतैंवातवसाइकहैमनहीमनकेस
वदासहसैं। बोलतिहेंतबोलउतैंपायविनु
विलावतियोंविलसैं। कोऊजानैंनहीदृगसे
रिकैवैकितहूहरिआंननछुवैनिकसैं। ७० ॥
॥ अथअनऊढायथा ॥ वैठीहुतीब्रजनारिनिमैं
वनिश्रीवृषभानकुमारिसभागी। बोलतिही
सषीचौंपरिवारभईतिहिवोलपरीअनुरा
गी। पीछेतेंकेसववोलिउठेसुनिकैंचितुचातु
रीआतुरीजागी। जाननिकोकहुकवेंहरिकेसु
रमारगहीसरसीदृगलागी। ७१ ॥ दोहा ॥
जगनाइककीनाइकावरनीकेसवदास। ति

र॰ प्रि॰ निकेदरसनरसकेसौंसुनिप्रछंनप्रकास॥ २२॥
22 ॥इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतवि
रचितायांरसिकप्रियायांपछन्नप्रादिवर्ननं
॥ ३॥ त्रतीयप्रभाव:॥ ३॥ अथदरसनलछ्नंदोहा॥
एहीऊदरसेंदरसुहैहिसकामसराग॥ दरस
नुचारिप्रकारकौवरनतहैंकविधार॥ १॥ अ
थदरसनभेद॥ एकजुनीकेंदेषियेंदूजोदर
सनुचित्र॥ तीजोसपनेंदेषियेचौथोश्रवन
निमित्र॥ २॥ अथसाछातदरसन॥ नीरमप
उतिदेहकीगईसुनतहीजाहि॥ कोजानेंहैहै
कहाकेसवदेषेंताहि॥ ३॥ राधिकाकोप्रछं
नसाछातदरसनयथा॥ ॥ केसवश्रीव्रछभा
नकुमारिसिंगारसिंगारिसवैंसरसें॥ सवि
लासचितैहरिनाइकेत्योंरतिनाइकसाइ
केसेवरसें॥ अवहमुषुदेषतिदर्पनमैंउप
मामुषकीसुषमापरसें॥ जनुआनंदकेंद
संपरनचंदुउत्योरविमंडलमैंदरसैं॥ ४॥
॥राधिकाकोप्रकाससाछातदरसनयथा॥
पहिलेंतजिआरसुआरसीदेषिघरीकुघ
स्योघनेसारहिलें॥ पुनिपोंछिगुलावतिलों ॥ ५॥
छिफुलेलअगोछेमेंआछेअ[illegible]गोछनि
कें॥ कहिकेसवमेदजिवादिसौंमाजिइतै

23 परस्यारिमैंअंजनुदें॥ वहुरयौंदुरिदेखिओदे
खोंतोदेखिरीलाज तौलोचननागीयहें॥५॥
॥अथकृस्नकोप्रछंनसाछातदरसनयथा॥
भालगुहींगुनलालल्लटैंलपटीलनरिमोतिनि
कीसुखदैंनी॥ ताहिविलोकतिआरसीलें
करआरससौंइकसारसनैंनी॥ कैसवकौंन
कहेंरसीपरसीउपमामतितैंअतिपैंनी॥
सूरजमंडलमैंससिमंडलमध्यधसीजनु
जातिविवैंनी॥६॥ कृस्नकोप्रकाससाछात
दरसनयथा॥ इकतौउरजोरउरोजनिप
मतैंसैमनोहरहारमहारी॥ सषीवितु
चलैंतरुनीनिहूकोतरुनैंनकौकेसववात
कहारी॥ हितसौंहितकीकहिदीपरिआवृ
तिफोलगिहौडरीकोतिगहारी॥ अवचंच
लुदैनदलालुविलोकतुराधिनोखीविलो
कनहारी॥७॥ अथचित्रदरसनयथा॥ दोहा॥
चित्रहूमैंहरिमित्रकीअतिविचित्रगति
गूढ॥ प्रगटकामकौंकल्पतरुकहिनजाइम
तिमूढ॥८॥ राधिकाकौप्रछंनचित्रदरसनु
यथा॥ लोचनन्नैंविलियेहृतकौंमनकीगति

र॰प्रि॰ जघपि नेहनहा हैं। औं नैन आइगाश्रमसी
24 करसों मउठै उछिकंपगा हीहैं। तासौं कहा के
हियेकहि कैसवनो जिसमुद्रमें बूडिरहा हैं।
॥१२॥ चित्रहूमैं हरिमित्रहि देषत पौं सकुचा जनु
वांहगाहा हैं। ९ ॥राधिकाको प्रकाससचित्रदर
सनुयथा॥ केसोदास नेहदसा दीपकु सजोइ
कैसें जोति हाके ध्यान तमतें जाहिनसाइ हैं।
औ चितिनिसौं बांधे अंनुका हुकौ बुझानी भुषपां
नीकौ कहानी रानी प्यासक्यौं बुझाइ हैं। घरी मे
री इंदुमुषी इंदीवरनैंन लिषी इंदिराके मंदिर
मैं संपति सिधाइ हैं। ऐसेहिं नऐसें हागावाव
लि गवारि कहा चित्रदेषें मित्रके मिले को सुष
पाइ हैं। १० ॥कृस्नकोप्रछंनचित्रदरसनयथा॥
रूछिवेकों इछिवेकौं मेरुउमुषि बधाइकै विलोकि
वेकौं भेदुके घूनकरयो परतु हैं। केसोदास बोलें
बिनु बोलनिकै सुनें बिनु हिलनि मिलनि बिनु
मोहि क्यों सरतु हैं। कौंलगि भरसें नोरूपु प्याइ
राषौं नैंननी न देषैं मीन कैसें धीरजु धरतु हैं।
चित्रमी चित्रिनकौ नीनीकें हा चितजैं मन चि ॥२२॥
त्रमें चितऐ चितु चौगुनो जरतु हैं। ११ ॥कृस्न
को प्रकासचित्रयथा॥ अंतरिसजघनी नज

25

छिनीसुलछिनलिआछीआछीअछिनीलिछ
विछमनीयहैं।किंनरीनरीसुनारिपंनगीनागी
कुमारिआसुरीसुरीनिहूनिहारिनमनीयहैं।
भोगनिकीभामिनीयोंदेहधरेंदामिनीयोंका
मकामनीयोंकेहआसेसकमनीयहैं।चित्रहू
मैंचित्तहितुरांत्रैंलेतिकोऊपहरामकीसार
मनीरमासोरमनीयहैं।।१२।।अथस्वप्नदर
सनसोहा।।कैसहूरससेनस्वप्नकोसदातुल्यो
ईहोइ।कवहूप्रगटनरेषियेंपहजानैंसबको
इ।।१३।।राधिकाकोस्वप्नदरसनयथा।।आतु
रज्योंउठिसोरिअलीजनआतुरज्योंगहियेंसु
गहात्यों।कहेमेरीरानीकहाभयोतोकहूंप्र
छतिकेसबपूछियेंज्यों।डीठिलगीकिधोंप्रेत
लग्योकिलाप्योउरपीतमुजोहिडरीयों।आंनन
सीकरसीकहियेंधकसोंवततेंअकुलाइउठी
क्यों।।१४।।कृस्नकोस्वप्नदरसनयथा।।नवपद
पदवीकोपावेंपदुदोपरतनाएकोविसोउरवसी
उरमैंनआनिवी।लोमसीपुलोमजानतिलसी
तिलोत्तमानमैंनेहूसमानमनमैंनकानमानि
वी।जोनिथेंनकौंनजातिअवहींजगाइत्रेंजो
तिजानिजानिहैंजोवहप्योहापहिचानिवी।
वातकसीवानीमहाभावसौंभवानीमहिकेसो

र॰प्रि॰ ताहूरतिमैंरतीकओतिआलिथी॥१५॥राधिका
26 कौप्रछंनश्रवनरसयथा॥सौंहहरिवाइ
॥२३॥ हिवाहसषीइकवारकैकांननिआंनिवसा॥
आंनेकोकेसवकांननितेंकितहुंकेवबैंननिमा
झसिधा॥लाजकेसाजधरेईरहेसबनैंनति
लैमनहांसौंमिला॥कैसीकरौंअबक्योंनिक
सैंराहेंईहरेंहियमैंहरिआ॥१६॥राधिका
कौप्रकासश्रवनरसनयथा॥कोलौंपीहैं
कनरसुरूपकौबुझेहैंप्यासकेसोनैंनभरिपाज
ई॥बरसकमाझपहवैसअलबेली
बीतेंदेहौंसुषुसबीनिसुक्योंअबहीनदीजई॥
बीरकौसौंमेरीवारवारीहेंतवारौंआनिनैंकु
कहिहसिहावतीताहतेरीलीजई॥एरलिउवावरी
अहातिअैसोबूझतोहैंनाहीसौंमनेऊकौजै
नाहसौंनकीजई॥१७॥कृस्नकौप्रछंनश्रवन
रसनयथा॥लंघतुहैंलोकलोकैलीकनडलें
धीजाइसबहीतसमुझावैंतोहिसमुझावैकौ॥
छोडनकहतुतनुतनकछुटेंलाजधनमीतुरा
छिसेऊकौबिरकहावैकौ॥सोचकोसकोच ॥२३॥
हूकौपरवपाछिमपंथुकेसोहासराकैकाल
5 ॥कैमनुधावैकौ॥कुंभुसुभकुंभकुरीसहूरिह
तेमेरमनजैसीसुनीतैसीतोहिआंछिनिरि

बावैको ॥ १९ ॥ हंसकोप्रकासश्रवणदरसनु
यथा ॥ निपटकपटहरुप्रेमकौंप्रगटकरुवीस
विसेंवसीकरनकैसैंउरआनियें ॥ कामकौंप्रह
रषनुकामनाकौंवरषनुकान्हकौंसंकरषनुस
वजगुजोनियें ॥ किधौंकेसोदासमहिमोहनी
कौंभूषनुहैं किधौंव्रजबालनिकौंदूषनुवषा
नियें ॥ सुनतहीधूम्योधामुवनवनडोलेस्यामु
राधेतेरोनामुकिधौंउचाटमंत्रमानियें ॥ १९ ॥ दोहा ॥
दरसनरमनरमनीनिकेकहेपरमरमनीय ॥ प्र
गटप्रेमप्रभावतेंअवकहौंकछूकमनीय ॥ २० ॥
॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचि
तायांरसिकाप्रियायांचतुर्विधदरसनप्रछंन
प्रकासवर्ननंचतुर्थप्रभावः ॥ अथनाइकनाइ
कावेसवर्ननं ॥ दोहा ॥ तिनिकेचितकीजानि
साखिप्रियसौंकहेसुनाइ ॥ कहैंसखीसौंप्रीतमें
आपुनतेंअकुलाइ ॥ १ ॥ राधिकाकीसखीको
वचनुकृस्नप्रति ॥ यथा ॥ कान्हिकीग्वालितो
आजुहलौंनसभारतिकेसवकैसेंहूंदहै ॥ मीरि
हूंजातिउठैंकवहूंजरिजाउडरघोकिरहौहसविरहैं ॥
कोरिविचारविचारतिहैंउपचारनिकेवरसेंस
खीमेहैं ॥ कान्हवुरोजिनिमानोतिहारीविलोक
निमेंविसवासविसेहैं ॥ २ ॥ कृस्नकोवचनरा
धिकाकीसखीप्रतियथा ॥ प्यासहूंरहीउर

र॰ प्रि॰
28

सभाजीभऊमहाजासकैसोदासमनोरहुकीलिं
दाविततनीहैं। मतकोमतोनलेइविधाकी
विसाइदेइसोभामनोसेइसेइसबसुषसांनो
॥१४॥ हैं। विमुसौलागतिगीतकेलिकीनपरतीति
प्रीतिकुरपाउनीमापविपछियानाहैं। तोवि
नुकहैंकोगाथधीरजुनताकेंसाथमोहिकोमि
लौवैहाथलाजकैंविकानीहैं। ३ ॥दोहा॥
पायसोंप्रगटनप्रीतिकेऊजितनेंकरहिउपाइ ॥
तेसबकेसबदासअबवरनेसबनिसुनाइ। ४।
जबचितवेंपियअनतदीतवचितवेतिरसंक ॥
जोतिविलोकेतिआपुत्योंअलिहिलगावेअंक ॥
॥५॥ कबहूप्रतिकंडूकरैआरससोंअँगराइ ॥
केसबदासविलासस्योंवारवारजंभाइ। ६। मि
हहीहसिहसिउदैकेहैसषीसोवात। ऐसें
मिसहीमिसप्रियापियहिदिषावैगात। ७।
योंहीपाउप्रियानिप्रतिअगटतअपनीप्रीति ॥
सोप्रछंनप्रकासकरिबुधिबलकरतसमीति।
८ ॥राधिकाकीप्रछंनचेष्टायथा॥ चोरिचोरि
चितुचितवतिमुंऊमोरिमोरिकाहतेहंसति
हियेहरषबढायोहैं। कैसोराइकीसौंतनजभा
तिकहावारवारबीराबाहिमेरीवारआरस ॥१४॥
नोआयोहैं। औंडसोंऔंडातिअतिअंचलउ
ठतउरउधारिउधरिजातुगातुछविछायोहैं।

फूलि फूलि भेटतिरहतिउरफूलिफूलिझलिझलि
कहतिकछूतेंआजुपायोहैं॥९॥राधिकाकोप्र
कासचेष्टायथा॥मेरोमुकुरमेंतेरीपजीरीसाथ
पेमिवेकोचाटैंओसअसुवोंपिरातप्यासउठे
हैं॥छोटेछोटेकरतकेहाथछुवावतिछवीलीछाती
छुवत्योजाइजाकेछुाइवेकोंअभिलाषवाढे है॥
बेलनजौंआईहौतौबेलोजैसेंबेलिपतुकेसा
रहकीसोंतेंतोकोनबेलकाढेहैं॥फूलिफूलिभे
टतिहैंमोहिकहामेरभिटूभेटतिनजाइजेवेभेटि
वेकोंउठैहैं॥१०॥केसकोप्रछंनचेष्टायथा॥छो
रिछोरिबांधोपागआरससौंआरसीलैअनत
हीआंनभांतिदेखतिअनैंसेहौं॥तोरितोरिडार
ततिनुकातुमकौंनपरकौनकेपरतपाइवावरेजो
ऐसेहो॥केवहूंसुटकोदेतचटकिछुजावोकान
मटकिऐडातजुरीज्योंजभाततैसेहौं॥वारिवारि
कोनपरदेतमनिमालमोहिगातकछूकौकेछू
आजुकान्हकैसेहौं॥११॥केसकोप्रकासचेष्टा
यथा॥गोलगिलोंचलेगुगारैनिदेंदिनेनासवनवाव
तसोंझपहाऊं॥केसवमनकरोवसकोरकहारक
जंत्रकहौंलोंगनाऊं॥हारिरहेहरिक्योंहूमिली
नमिलाऊंमोतोहितोमांगोसुपाऊं॥ढाटविजाइ
मिलौमिलिवेकडऐोकहककनीयाकरिल्याऊं॥
॥१२॥अथस्वयंदूतलछनंदोहा॥जौक्योंहूने

र॰ प्रि॰ 30 मिलैंकहूँकेसवसोऊ इहै। तौ तब अपनैं आपुही
बुधिबलहोतबसाढ॥१३॥राधिकाकौप्रछंनस्व
यंदूतयथा॥ दूरितेदेखिबेकोंहूँ हैदीनमनाईऊ
॥१५॥ तालिखिदालिखिबेवाढ। देखिमिल्योमनुहौंहू
मिलीमिलिखेलिवेहूकौमिलीमतिमाढ॥ औ
रमैंभोकत्यलाइहौं केसवकैसें हूकान्हकुमा
रदैठाढ॥ तौहूहैनेबारमुरारकेतारलौंहूँ दिदै
लालहमैंतुम्हेंईढी॥१४॥राधिकाकौप्रकास
स्वयंदूतयथा॥ धाईनहीघरदाईपरीजुरआई
बिलाईकीआंखिबहाऊं। पोरियैंआवैरसोंधु
रतेपरऊंचोसुनैंसुमहादुखपाऊं। कान्हनिवा
रकुस्याउनवोइनिआलिनिकोलगिहौंबहराऊं ॥
मोसंगएसबसोबनआवैंकिहौंइनिकेसंगसो
बनआऊं॥१५॥हंसकोप्रछंनस्वयंदूतयथा॥
आपनेईभाइकेएसोहुतसरीकसवैकेसोदास
दासअपोंचलतचितलीनेहैं। आपुएअठाऊके
तोलेतनाउमेरोवेतोवापुरेमिलापकेसलापक
रिहीनेहैं। राधिकौमुनाइकेंकहतअैसेंधन
स्यामसुबलकोलेलैनामुकामुभयभीनेहैं। सा
थलैसखानिअबबनजैबोधोंआहमखेलिबे ॥१५॥
कोंसंगसखासाखामृगकीनेहैं॥ १६॥हंसको
प्रकासस्वयंदूतयथा॥ बनजेअवेलोंकोऊठली
हैंकेसवहौंतुमहेतअरीआरिहौं। केघूघे

लिये छबीलिन आवतु आजु ही भल्यो न भल्यो गरैं
परि हौं । हेतु हैं हिय हैं किधौं ना हित ऊ हितु ना
ही यैं तो ललाज रहि हौं । हम सौं यह बकि जिये औ
सौ कहै जु कहौ है कहौ व कहा करि हौं ॥ १७ ॥
॥ सोरठा ॥ ऊधौ पुनि इहि भांति करि विरह विधि हि
तनि जनाइ । आपुन ही तैं लाज तजि पति हि मि
लैं अकुलाइ ॥ १८ ॥ यथा ॥ पंथ न थकित पलु
मनोरथ रथनि के केसो दास जगा मग जैं सोगायें
गात मैं । पवन विचारु चक्र चक्रमनि चितु चाहि
भूतल अकास भ्रमैं घाम जल सीत मैं । को लौं
राषौं थिर वक वापी कूप सर सम हरि बिनु घरी
नैं बरु वासर बितीत मैं । पानु गरि फौरि तोरि
लाज तर जाइ मिलौं आपु ही तैं आपगा ज्यौं
आपनिधि प्रीतम मैं ॥ १९ ॥ यथा ॥ जाति भई स
ग जाति लैं कात रति कैं सबै हंकुल सौं हितु हूवौ ॥
गर्व गयो गुन जोवन रूप को पुन्य सुतो पल ही प
लु षयौ । कान्ह तिरीछे आंन कि पैंक हौं लाज सौं हा
नीकैं हूं नातो ई टूट्यो । भाग्यौ सबै सम है रितु मैं
तुम पैं तन कौं कपटौ न छिप्यौं ॥ २० ॥ अथ
अनूढा सोरठा ॥ अधिक अनेक । लाज तें पीय पैं
जाइ न आपु । क्यौं हूं करि सषी वेंताकै उर कौ

र० प्रि० तोषु॥२१॥यथा॥जानेकोकेमयकौनेंकह्यौं
32 कवकान्हहमारेहिऔरनिफूले॥पांननवांह
नपान्योछियेंतवतेभरिअंखियांछियलेतिसमूले ॥
॥१६॥ जाकूनहाथलियेगिवलाइल्योंलेकुसकेलिक
लापहभूले॥जानतिहौंवहकामकलीकुम्हि
लाइगास्पैंधकुल्योंफिरिफूले॥२२॥अथप्र
थममिलनस्थानवर्ननदोहा॥जनीसहेली
धाइघरसूनैंघरनिविचार॥अतिभयउत्सव
व्याधिमिसिन्योंतेसुवनविहार॥२३॥इनहीतें
रतिहेतुहैंप्रथममिलनसंसार॥केसवरस
नारंककोरखिराब्योकरतार॥२४॥अथजनी
केघरकोमिलनयथा॥वेधुकेंकुमारिकाकों
व्रजकीकुमारिकानिमाझसाझकैसोदेसम्या
सपगपेलिकें॥कामकेलितासीखलपेमपाषि
सीअमलराधिकाकैंबुधिवलफंदभुजमेलिकें ॥
सोतिसोतिहरिहरिहरिपरिपरिस्यामिलाइकनाष
लाछभातिलीअनेपकपकेलिकें॥जनिकेअ
जिरअनुरजनीमेंसजनारीसांचीमीनीस्या
मचोरमिहचनीखेलिकें॥२५॥सहेलीकेघ ॥१६॥
रकोमिलनयथा॥नैननिकेतारेनिमैंराखोप्या
रेपुतरीकेंमुरलीज्योंलाइराखौदसनवसनमैं ॥

राखौ भुजवीच वनमाली वनमाला करि वंदन औं
चतुर चंदन हराखौ तन मैं ॥ केसोराइ कलकंठ राखो
वलि कठुला कै करम करम क्यों हू आनी है भव
न मैं ॥ चंपक कली ज्यौं कान्ह सूघि सधी देवता
सी लै हू मेरे लाल इन्है मेलि राखो मन मैं ॥ २६ ॥
॥ धाइ के घर को मिलन यथा ॥ हंसत बेलत
बेल मंद भई चंद दुति कहत कहानी अरु बूझत प
हेली जात ॥ केसोदास नीद वस आपने आपने
घर हेरै हेरै उठि गए वालिका सकल वाल ॥ घोरि
उठे गगन सघन घन चहू दिसि उठि चले कान्ह धा
इ वोली उठि तिहि काल ॥ आधी राति अधिक अं
धार मह कैसैं जैहौ राधिका की आधी सेज सोइ
रहो प्यारे लाल ॥ २७ ॥ सूने घर को मिलन यथा ॥
देषति हो चित्र सनी चित्रसाला वाला आजु रूप
की सी माला राधा रूपक सुहायो री ॥ नूपुर के सु
र लिन्है नपरूप तानैं लै ति पगतल तालें रति अ
सि मन भायो री ॥ ऐसे मैं दिखाई दीनी आंच कौं कु
वर कान्ह जैसे भये गात तैसे जात न वतायो री ॥
केसोदास कही परै अलज सलज सेन जल जैसे
लोचन जल रसे हू आयो री ॥ २८ ॥ अथ निसि वा
र को मिलनु यथा ॥ एक समै सव देषन गोकुल
गोपी गुपाल समूह सिधाए ॥ राति हू आई च
लै घर कों दसहू दिसि मेह महा झरि आए ॥ हूस

॥ ५ ॥

तबोलततहाँ समुझैं जगके सबपोंछिति मैं तमु
छाये। ऐसे मैं स्यामसुजान वियोग विरहकै दि
योरु क्रियो मन भाये॥ २९॥ भयको मिलन य
था॥ साँझ आगि लागी वृषभानजू के भौन महि
लोर ब्रजवासी घटै चहुँदिसि धाइकै। भरतह
सोर भोर भीर नरनारिनिकी सबहीकी छूटि लाज
गई हाहा भाइकै। ऐसे मैं कुँवर कान्ह सारे सुकथा
हरिकै राधिका जगाइ भोर जुरती जगाइकै। लोचन
बिसाल चारु चिबुक कपोल चूमि चंपे कीसी माल
लोल लीनी उरलाइकै॥ ३०॥ उत्सवको मिलनु
यथा॥ बलकी बरस गाँठि ताकी रातिजागिबे कौं आ
ई ब्रज सुंदरी सबारि तनु सोनो सों। केसो रास भीर
भई नंद जूके मंदिरनि मध्य अथऊ रथ वचेन कहूं
कोसों। गावति बजावति नचति नाना रूपकरि जह
तहाँ उमगतु आँनद कौ ओनो सों। साँवरे की सखी
सेजसोवति हीं राधिकाजे सोए आँनि साँवरे ऊमा
नि मन गौं भो सों॥ ३१॥ व्याधिको मिलनु यथा॥
सोधि निसानु निदान दिये उपचार विचार कियें
न घिरानी। वैदकी सासन ब्याधिविनासन हे
मकु तासन हून हिरानी। केसव क्यों हूव लोव
लि बोलति दीन भई वृषभान की रानी। आए
ही मेटि मिसकु करिकै बैंद्र ज्यों उनिकै वरूपा रपि
रानी॥ ३२॥ अथपत्रो ते मिसको मिलन यथा॥ ॥ ५ ॥

स्योतिकैबुलाइ कुती वेटी वृषभानजू की जैंवेकों
जसोदारानी आनी हैं सिंगारु कैं । भोजनु कैं अव
न विलोकिवे कौं पानषाति ऊपर अंकेली गई आं
नदु विचारि कैं । देषत देषत हरि भांवते कों भाग
दछिदेरि गइ ही ग्वालनै ऐसो वेना उरु धारि कैं ।
जे छिभरि अंक मन भायो करि छाग्यौ मुषकें सरि सौं
माग्यौ लई वे सरि उतारि कैं ॥ ३३ ॥ मुवनविहारकौ
मिलनु यथा ॥ देहरि को लागि गई कहि हैं नपसार
कु अगोलि भरै पुलनि फूटें ॥ छोडैं न री मगु छोडै
जो पावैं षु उवें विलोकनि लाज लखें टी ॥ वात
सभारि कहौं सुनि हैं को ऊ जानत हौ यह कोन की
वेटी ॥ जानत है वृषभान की हैं पर तो हित जानत
कौन का वेटी ॥ ३४ ॥ जलविहारको मिलनयथा ॥
हरि राधिका मानसरोवर के तट ठाडे री हाथ सौं
हाथु छिये ॥ प्रिय के सिर पाग प्रिया मुकता भर
भ्राजति मालनु हूलनि हिये ॥ कटि के सब काछ
नी सेत कसें सव हैं तिन संदन विंदु किये ॥ निक
सो छित छीरसमुद्र हूतें संग श्री पति मानउ श्री हि
लिये ॥ ३५ ॥ यथा ॥ दितु ग्रीषम की प्रतिवासर के
सव षेलत हैं जमुना जल में ॥ इत गोपसुता उहि
पार गुपाल विराजत ग्वालनि के गन में ॥ अति षुउत हैं
गति मीन निमी मिलि जाइ उठै अपने थल में ॥ इहिं भां
ति मनोरथ पूरि दुओं जन हू रिरहे छवि सों छल में ॥ ३६ ॥

र॰ प्रि॰ ॥दोहा॥ इहिविधिराधारमनकेवरनोमिलन
36 विसेषि॥ केसवदाससविलासवहुवहुवुधिलीज
लेषि॥ ३७॥ श्रोरूजुतहनीतीसरीक्योंवरनो
॥२९॥ इहिठोर॥ रसमैंविरसुनवरनियेंकहतरसिक
सिरमोर॥ ३८॥ एसवजितनीनाइकावरनीम
तिअनुसार॥ केसवदाससवखानियेंवुधिवल
आठप्रकार॥ ३९॥ इतिश्रीमन्महाराजकु
मारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां
वेसावर्णनंपंचमप्रभावः॥५॥ दोहा॥ प्र
थममिलनथलमैंकहेअपनीवुधिअनुसार॥
हावभाववर्णनकरौंसुनिअववहुतप्रकार॥
१॥ अथहावलछनं॥ श्रांननलोचनवच
नमगप्रगटतिमनकीवात॥ ताहीसौंसवकह
तहैंभावकविनिकेतात॥ २॥ अथभावभेद॥
भावतेपंचप्रकारकेसुनिविभावअनुभाव॥ स्था
ईसात्विककहततहैंविभिचारीकविराव॥ ३॥ अ
थविभावलछन॥ जिनतेजगतअनेकरसप्रग
टहोतअनयास॥ तिनिसौंविमतिविभावसवक
हिवरनतकेसवदास॥ ४॥ सवविभावद्वैभांतिके
मवरा इवखानि॥ आलंवनइकदूसरेउदीपन ॥ २०॥
मनमानि॥ अथआलंवनस्थानछ्व्वे॥ दंप
तिजोवनरूपजातिलछनजुतसखिजन॥ कोकि
लककलितवसंतफूलफलदलअलिउपवन॥

37 गलबंरजलजुतअमलकमलकमलाकर॥
चातकमोरसुसब्दतडितघनअंबुदअंबर॥
सुभसेजदीपसौगंधगृहपानगानपरिधा
नमति॥नवनृत्यभेदवीनादिसबआलंबन
केसबबरनि॥६॥अथउद्दीपननामसेह॥
अवलोकनिआलापतेपरिरंभननखरदान॥
चुंबनादिउद्दीपहैंमर्दनसपरसमान॥७॥अ
थअनुभावलछनं॥आलंबनउद्दीपकेजेअनु
करनबखानि॥तेकहियेअनुभावसबरूपतिप्र
तिविधान॥८॥अथथाईभाव॥रतिहांसीअरु
सोकपुनिक्रोधउछाहहिजानि॥भयनिंदावि
स्मयहितस्थाईभावबखानि॥९॥अथसात्विक
भाव॥स्तंभस्वेदरोमंचसुरभंगकंपवैवर्ण॥अस्रु
प्रलापुबखानहीआठौनामनअंन्य॥१०॥अथ
व्यभिचारीलछनं॥भावजुसबहीरसनिमेंउपजे
केसबराइ॥बिनानियमतिनिसोंकहतविभिचारी
कविराइ॥११॥इतिभावा:॥अथहावलछनं॥
प्रेमराधिकाकृस्नकौतातेहैंसिंगार॥ताकेभावप्र
भावतेउपजतहावविचार॥१२॥अथहावभेद॥
हेलालीलाललितमदविभ्रमविहितविलास
किलकिंचितविछित्तिअरुकहिविब्बोकप्रकास॥
॥१३॥मोट्टाइतसुनिकुट्टमितबोधकादिकभाव॥

र॰ प्रि॰ 38 अपनैंअपनैंबुधिबलबरनतकबिकबिराय॥
॥१४॥अथहेलाहाव॥प्रगटनप्रेमप्रतापतेभू
लतुलाजसमाज।सोहेलाजिहिंहरतहियरा
॥१९॥ धाश्रीब्रजराज॥१५॥राधिकाकोहेलाहाव॥
॥यथा॥अवलोकनिअंकुसऔंचिअनूपम
मनगयंदगयोभलेंगहिमेली।मदुहासुसुवासु
उठाइमिलीसहजोन्हकीजामितिमाठअके
ली।अधरारसुप्याइकियेबसकेसवराइकरी
रसरीतिनवेली।बनमेंवृषभानसुतासुघरी
हरिकौंहरिलैंगईहेलहिहेली॥१६॥कृष्णको
हेलाहावयथा॥बेनुसुनाइधुनोहलईवहमो
नुभुलाइकैभाँतिभलीकों।फूलिगयोमनुभ
ल्योबिलोकितकेसवकाननिरासथलीकों।म
धुमहामधुपानकराइकियोपरिरंभनकामक
लीकौं।हेलहीश्रीहरिनागरआजुहलोंमनु
श्रीवृषभानललीकौं।१७॥लीलाहावलछनं
॥दोहा॥करतजहांलीलानकौंप्रीतमुप्रियाव
नाइ।उपजतलीलाहावतहबरनतकेसवराइ॥
॥१८॥राधिकाकोलीलाहावयथा॥पाइनिकी
परिवोकरिवोअपनाकअनेकसोंमानुमनैंवो। ॥१९॥
सीठोतमोहबवाइवोबैंवोविसेबिचहूंहसिवो
क्विवितैंवो।वीरकुचीलनिऊपरपोढिवोपात

हीकेघरकैंभागिऐंसो। आंखिनिमूदिकैंसाष
तिराधिकाकुंजनितेप्रतिकुंजनिजैवो॥१९॥
॥कृस्नकोलीलाहाववंयथा॥ गोंकिकरोषति
मेंषटिकेवेंअवासनिऊपरदेषनधावे। चित्रि
तचित्रमेंआपुनपोअवलोकितआंननसौंउर
लावें। निंदितगोपचरित्रनिकोंकहिकेसवधानु
ककेगुनगावें। आंगनतेघरमेंघरतेफिरियोनि
सिवासरकोंविरमावें।२०॥ललितहाववदोहा
बोलनिहंसनिविलोकिवोचलनिमनोहररूप॥
जैसेंतेसेंवरनियेंललितहावअनुरूप।२१॥
॥राधिकाकोललितहाववंयथा॥ कोमलविमल
मनविमलासीसखीसाथकमलाज्योंलीनेंहा
थकमलसनालके। नूपुरकीधुनिसुनिभौरे
कलहंसनिकेचौंकिचौंकिपरेंचारुचेंटुवाम
रालके। कंचनिकेभारकुचभारनिसकुचभार
लचकिलचकिजातिकटितटवालके। हेरेंहेरें
बोलतिविलोकेंहिंहसतिहेरेंहेरेंहेरेंचलति
हरतिमनलालके।२२॥ कृस्नकोललितहा
ववंयथा॥ चपलापटुमोरकिरीटलसेंमघवा
धनुसोभवढावतहैं। मदुगाजतआवतवेंन
वजावतमित्रमयूरनचावतहैं। उठिदेषि
भटूभरिलोचनचातककेचितकीतापवुझावतहैं॥

र॰ प्रि॰
40

घनस्यामु घनो घन वेष घनैं भुवनैं वनते
ब्रजआवत हैं ॥ २३ ॥ अथ मद हाव दोहा ॥
अरन प्रेम प्रतापते गर्व बढ़ै वह भाव ॥ तिनिके
॥ २० ॥ तरुन विकार ते उपजत हैं मद हाव ॥ २४ ॥ रा
धिका को मद हाव यथा ॥ छवि सौं छवीली वृष
भान की कुंवरि आजु रही रूती रूपमद मानु मद
छकि कैं ॥ मार हूतें सुमार नंद के कुमार ताहि आ
एरी मनावन सयाने सब तकि कैं ॥ हैंसि हैंसि सो
हैं करि करि पाइ परि परि कै सो राइ की सौं जवर
हे जिय जकि कैं ॥ तैं ही समै उठे घन घोरि घोरि
दामिनी सी लागी लोटि स्याम घन उर सौं लपटि
कैं ॥ २५ ॥ कृस्न को मद हाव यथा ॥ मद हि मोहनी
मोहि सकैं न सची चपलो बल चितु वचा मानत हैं ॥
रति कौ रती औं हू न कानि करें दुति चंद्रकला न घटि
मानत हैं ॥ कहि के सब औरकी बात कहा रमनी
पर माहू न मानत हैं ॥ वृषभान सुता हित मत्त
मनोहर औरहि दीठि न आनत हैं ॥ २६ ॥ अथ
विभ्रम हाव दोहा ॥ वो कुविभूषन प्रेम ते जहां
होहि विपरीत ॥ रसन तनमन रसित गति वि ॥ २० ॥
भ्रम केगीत ॥ २६ ॥ राधिका को विभ्रम हाव यथा ॥
कटि के तट हार ले पेटि लियो कल किंकिनि लै
उर सौं उर माई ॥ कर नपुर सौं पग पौंची विनाम्र

41 गिया सुधि अंचल की बिसराई ॥ करि अंजन अनुरंजि
त अधर कपोल करी जुत जावक नैंननि काई ॥ सुनें
आवत श्री ब्रजभूषन भूषन भूषित हां उठि देष
न धाई ॥ २७ ॥ कृस्न को बिभ्रम हाव यथा ॥ नंदनंद
न खेलत हैं बन गात बनी छबि बंदन के जल की ॥
ब्रषभानकुमारि बिलोकत ही सुख चित्त मैं बिभ्रम
की झलकी ॥ गिरि जात न जात न पान निषात बिरी
करि पंकज के दल की ॥ बिहसी सब गोपसुता हरि
लोचन मंदि सुरो बिद गंचल की ॥ २८ ॥ अथ बि
हित हाव दोहा ॥ बोलन के सम मैं बिषै बोलन दे
त न लाज ॥ बिहित हाव तासौं कहत केसव कबिसि
बिराज ॥ २९ ॥ राधिका को बिहित हाव यथा ॥ मेरे क
हें रहिये जुत ऊ फिरियो बन जो हठि काठ रहौंगी ॥
वैरि खो प्रेम समुद्र पराग कराग करे रहतु क्यों निबहौं
गी ॥ हौं सम मेरें सजनी सिंगार के बहूं हरि सौं हसि
बात कहौंगी ॥ पी चित की चित्रसारि चढी चित्र
की पुतरी भई कोलौं रहौंगी ॥ ३० ॥ कृस्न को बिहि
त हाव यथा ॥ केसव राइ की सौं आजु सखी ब्रषभा
नकुमारि उराहनो रानो ॥ गारि दई अरु मारि दई
अरबिंदनि सौं मनु के हित हीनो ॥ सीष दई सुष पा
इ लई उर लाइ सुगंध बढाइ नवीनो ॥ ऊतक देइ
को नंदकुमार कछू सिकनी चितें ऊंचो नकीनों ॥ ३१ ॥
॥ अथ बिलास हाव दोहा ॥ बोलत डोलत हसत

र॰ प्रि॰ 42 अरु चितवत चलत प्रकास। अलथलकेसव
हासकहि उपजत विविधि विलास॥३२॥ रा
धिकाकौ विलासहाव यथा॥ किलकेतु अलि
॥२२॥ गुतिलके विलकमिसभौंहनिमैं विभ्रम निभौं
नभेर दीने हैं। लोचननि सोचुनसकोचुननचा
वतहैं दसननचमकदरवाकितचितकीने हैं। मंद
हासमुखवासअनपामदासकेरिलीनें केसो
दासजियजछपिप्रवीने हैं। मोहनकेतनमन
मोहिवेकौं मेरीभटूतेरेमुखसुखहाअनंतव्र
तलीने हैं। ३३॥ कृष्णकोविलासहावयथा॥
जिननिहारेतेनिहारिवेकौं निहारतिकाह
नानिहारेजिनिकेसेंहूनिहारे हैं। सुरनरनागग
वकन्यनिकेप्रानपतिपतिदेवतानिहूकेहिय
निविहारे हैं। रहिं विधिकेसोराइरावरेअसब
अंगउपमानउपजीविरंचिरचिहारे हैं। रूप
मदमोचनमदनमदमोचनकि त्रियव्रतमोचन
एलोचननितिहारे हैं। ३४॥ अथकिलकिंचितह
वदोहा॥ श्रमअभिलाषसगर्वस्मितक्रोधहर
षभयभाव। उपजतएकहीवारजेहं तहंकिलकिं
चितहाव। ३५॥ राधिकाकोकिलकिंचितहाव ॥२१॥
यथा॥ कोनेंरसनेविहसेलाषिकोनहिकापर
कोपिकैभौंहचढावैं। भलतिलाजभटूकबहू
कबहूं मुखअंचलुमेलिदुरावैं। कोनकहेलेति

43 बलाइबलाइल्यौतेरीइसायहमोहिनभावैं ।
ऐसीतोतकबहूनभईअबतोहिरईजि
निबाधूलगावैं ॥ ३६ ॥ कृस्नकोकिलकिंचि
तहावयथा ॥ ऐसीहैंगोकुलकेकुलकीजि
निराछिननैंनकियेअनुकूलै । अंजनसेमन
रंजनकेसबहारविहारलतालगिझूलै । बा
लैंमुकोउमकोनअबोलेफिरेबिमुकैसहि
प्रेमहिफूलै । रूपभासबकेबिसऐसैंहु
कान्हकहेरसकोनकेफूलै ॥ ३७ ॥ अथविछि
त्तिहावसोहा ॥ भूखनभूखिवेकौंजहाहोइअ
नादरूआनि । तहंविछित्तिविचारिजेंकैसब
राइबखानि ॥ ३८ ॥ राधिकाकोविछित्तिहाव
यथा ॥ तनआपनैंभाइसिंगारसिंगारनहैंपै
सिंगारसिंगारहैंयथाहीं । ब्रजभूखननैंनति
भूखहैंजोकोसुतोपैसिंगारउतारिनमांहीं ।
सबुहोतुसुगंधनिहातेसुगंधसुगंधसुगंध
मैंमातिनुभांहीं । सखिभूखनहैंसबतोहतै
भूखितभूखनतेतुमभूखितनाहीं ॥ ३९ ॥ कृस्न
कोविछित्तिहावयथा ॥ पाननबाहूनपागरवी
पलटेपटखिलकेहाथधरिकैं । कंठसिरख
नमालमनोहरहारउतारिधरेस्मरिकैं ॥

र. प्रि. ४४ चंदनचित्रविचित्रनिलोपिसुनोकविलोच
नसोंनरिकैं। अंगसुभाइसुवासप्रकासि
।२२। तलोपिहोकेसवक्योंकरिकै।४०। अथ
विब्बोकहावदोहा। रूपप्रेमकेगर्वतेकप
टुअनादरहोइ। तहँउपजतुविब्बोकरसु
पहँजानतुसबकोइ।४१। राधिकाकौवि
ब्बोकहावयथा। आवतजोनिकैंसोइरही
हरखैंहरिआ[illegible]नजातिजगाई। साहसुकै
उरमध्यधस्योकरजोगतिरोमकोसेविजनाई।
नावाविमोचितचौंकिउठीपहिचानिकुकी
वतिआकहिवाई। वासरगाइगवारखराव
तआवतहैंनिसिसेजपराई।४२। कृस्नको
विब्बोकहावयथा। एकसमैंइकगोपीसोंकेस
वकेसैंहूँहाँसीकीवातकही। जाकेहतातहई
तजितातिहिकैहमसौंरसरीतिनही। मुक्तोप्र
तिउत्तरदेइसबीदगआंसुनिकोअवलोउ
मही। उरलाइलईअकुलाइतऊअपरातक
लौंहिलकीनरही।४३। अथमुद्दायतहाव
दोहा। हेलालीलाकरिजहाँप्रगटतनाविं
कभाव। बुधिबलतेकितसोभिजेंकहिमुद्दा २२
इतहाव।४४। राधिकाकौमुद्दाइतहावयथा।

45 बोलततेहँसहरिबागेवतेजेमहाबैठीत्रियारतिते
ऋतिलोंनी।केसरकैसेंकूपीछिमेंडीछिपरी
कुचकुंकुमकीगतिलेंनी॥मानुसमीपउराइ
भलेंतिनिसाविभ्रमाबतिनिकीगतिहेंनी॥४
त्रिभुवकीपुरिविलोचनसंचिचितेरेकेहस्ते
ढोडोनें॥४५॥कृस्नकोमुद्दाइतहावयथा।
भोजनुकेंअबभोनेंसभामाहिंबैठेहैंनंदसत
सुखकारी।गोपघनेवलवीरविराजतचात
वनाइखिरीगिरिधारी।राधिकाझांकिझरोखा
हुंझांकीसोलागिगिरेमुरझाइविहारी।सेक
भयोसमुझेसकुचेहरवाइकह्योहरिलागी
सुपारी॥४६॥अथकुट्टमितहावदोहा॥केलि
कलहमैंसोप्रियेंकेलिकपटपटरूप।उपज
तुकुट्टमितहावतहंकहिकेसवकविभूप॥७
॥राधिकाकोकुट्टमितहावयथा॥पहिलेंहरि
रूठिचलीउठिपीठिदेमैंचितईसखीतेंनल
खारी।पुनिधाइधरेंहरिजूकीभुजानितेघू
टिवेकौंबहुभांतिझखारी।केंकुचपीडनदंत
नखक्षतवैरिनिकीमरजादनधारी।फिरि
ताहीकोंपानखवावतिहैउलटीकचघूंघरीति
कारीतिसखारी॥४८॥कृस्नकोकुट्टमितहावयथा॥

र॰ प्रि॰ 46

दृवतहांजितिमोंनगहीअरुमोनतजी
कहुवोलनुउचारें। मोंहेंकियेंहूंनसोहेंकि
॥२३॥ योमनुहारिकियेंहूंनसधेंतिहारें। हाहा
केंहारिरहेनरहेंनंरहेनपाइपरेजिहिंमोततनि
मारे। मंडतहेंमुकुतोहीकोअंकलैयोंक
छुप्रेमकेपाठतिनोरे। ४९। अथवोधक
हावदोहा। गूढभावकेवोधजहांकेसवकोउ
रईहोइ। तासोंवोधकहावसवकहतसया
नेलोग। ५०। राधिकाकोवोधकहावयथा।
वैठीहुतीवृषभानकुमारिसखीनिकीमंडली
मंडिप्रवीनी। लैकुभिलोनोकंजपरीइकपां
इनिआंनिगुवालिनवीनी। चंदनसोंछिरक्यो
वहवाकेंहपानदियेंकरुनारसभीनी। चंद
नचित्रकपोलनिलोपिकेंअंजनुअंजिविदा
करिदीनी। ५१। कृष्णकोवोधकहावयथा। स
खीमोहनगोपसभामहिंगोविंदवैठेहुतेदुति
कोंधरिकें। जनुकेसवचंदुलसेंचितुचारुच ॥रा॰॥
कोरनिकोंहरिकें। तिनिकोंउलटोकरिआं ॥२३॥
निदियोकिहिंनीरजनीरनयेभरिकें। काहे
तेनेंकुनिहारिमनोहरफेरिदियोकलिकाकरिकें। ५२।

47 दोहा ॥ राधा राधा रमन के कहे यथा मति हाव
टिर्दई केसव दास की छमिजहु के विके विराव
॥ ५३ ॥ इति श्रीमन्महाराजकुमार श्री इंद्रजीत वि
रचितायां रसिकप्रियायां हावभाववर्ननं ष
ष्ठ प्रभाव ॥ ६ ॥ अथ अष्टनायका वर्ननं दोहा
स्वाधिनपतिका उत्का वासकसज्जा नाम ॥ अ
भिसंधिता वषानि जें और खंडिता वाम ॥ १ ॥
केसव प्रोषितप्रेयसी लब्धा विप्र सुजान ॥ अ
ष्ट नाइका ए सकल अभिसारिका सुजान ॥ २ ॥
अथ स्वाधीनपतिका लछनं ॥ केसव जाके गुन
वध्यौं सदा रहें पति संग ॥ स्वाधिनपतिका ताहि
हौं वरनतु पाइ प्रसंग ॥ ३ ॥ प्रछंन स्वाधीनपति
का यथा ॥ केसव जीवन जो व्रज को पुनि जीव हू
ते अति वा पहि भावें ॥ आप रचें अरचें कु मा
रत्नि वारत माइन वार लगावें ॥ ता पें तगवार की वे
टी महावर पांइ रुवाइ रुवाइ दिवावें ॥ हौं तो वची
अब हा सिनि हा सों सें और जो देषे तो ऊत रु
आवें ॥ ४ ॥ प्रकास स्वाधीनपतिका यथा ॥ चोली
को मोपें नु तोहि कें रतु सवारि वोई मुकुर जो तो
ही महमूरति समानी हें ॥ तें हाथ परे व तो पें पा
पी पति केसोराइ पति नीव हूत पति देवता वषा
नी हें ॥ तेरे मनोरथ भगीरथ रथ पाछें पीछें जे

र० प्रि० लतु मेरे मंगा को सो पांनी हैं ॥ ऐसे भांत कों
५८ न जुन मानी सुनि मेरी रानी उलि कें तो तेरी वा
॥ २८ ॥ नी बैर की सी बांनी हैं ॥ ५ ॥ उत्का लछन ॥ सोह ॥
कौंन हू हेत न आइयो प्रीतम जाकें धाम ॥ ता
कों सोचत सोच हिय केसव उत्का वाम ॥
६ ॥ प्रछंन उत्का यथा ॥ किधौं गेह काजु कि
न छूटतु सषा समाजु किधौं कें घू आजु प्रत
वासर विभात ते ॥ दीनों तें न सोधु किधौं काहू
सौं भयो विरोधु उपज्यो प्रबोधु किधौं डर अ
वदात ते ॥ सुष मैं न देउ किधौं मो ही सौं कप
ट नेकु किधौं देषि मेकु अति डर अथरात तें ॥
किधौं मेरी प्रीति की प्रतीति लेत के सो राइ आज
हूं न आए मन सधौं कोन वात ते ॥ ७ ॥ प्रकास उ
त्का यथा ॥ सुधि भूलि गई भुलए किधौं काहू कि
भूलै ई डोले तबाट न पाई ॥ भीत भए किधौं केस
व काहू सौं भेट भई कोऊ भांमिनि भाई ॥ मग आ
वत हैं किधौं आए गए किधौं आवहिंगे सजनी
सुषदाई ॥ अब आए न नंदकुमार विचार सु कौं ॥ २८ ॥
न विचार अवारल गाई ॥ ८ ॥ वासकसज्जा लछन ॥
वासकसज्जा होइ सो केसव स विलास ॥
स्वित वैरति गेह द्वार सौं पीय आवन की आस ॥ ९ ॥

49 प्रछन्नवासकसज्जायथा ॥ चंदनुविटपुवपु
कोमलअमलदलवलितललितलतालप
टीलवंगकी ॥ केसोदाससतामेंदुरीदीपकीसी
सिखासेरिदुरावतिनीलवासदुतिअंगअंग
की ॥ पौंनपानुपंछीपसुवसुसदजितजित
होइतिततितचाहेंचोपसंगकी ॥ नंदलाल
आगमविलोकेंकुंजजालवाललीनीगतितें
हीकालपंजरपतंगकी ॥ १० ॥ प्रकासवासक
सज्जायथा ॥ भाषतिहेंसुखवैंनसखीसकुला
चहियैंअभिलाषनिपोहें ॥ कोमलहासनि
नैंनविलासनिअंगसुवासनिकैंमनुमोहें ॥
मूरतिवंतकिधौंतुलसीतुलसीवनमैंरतिमू
रतिकोहें ॥ कुंजविराजतिगोपवधूकमलाज
नुकुंजकुटीमहसोहें ॥ ११ ॥ अभिसंधितादोहा
मानमनावतहूंकरैंमानदकौंअपमानु ॥ इनौं
जुवतिनिविनुलहैंअभिसंधितावखानु ॥ १२ ॥
प्रछन्नअभिसंधितायथा ॥ वारवारवोलेंजव
वोल्योनवालीसतववालकज्यौंवोलिवेकों
कतविललातुहें ॥ ज्यौंज्यौंपत्योपाइनिस्यौं
पाइनतेपानुभयोहोतुकहलअवकियेंमाख
नसोगातुहें ॥ केसोदाससवछाडिकियेहठ

॥र॰ प्रि॰॥ दीसों हेतु ताहू छाडि जीय जियैं विनु कहा जा
50
तु है॥ ऐसे प्यारे पाउ हैं तो मान्यो न मन नाऔ
॥२५॥ मन ऐसी तो हिय छिये जु पाछें पछितातु है॥
॥१३॥ प्रकास अभिसंधिता यथा॥ पाइ परें
हू न प्रीतम त्यों कहि केसव क्यों हू न मैं द्रिग
दीनो॥ तेरी सखी सिखसी बीन एकऊ तो बही
की सिखसी बिजुलीनी॥ चंदनु चंद सरोज स
मीर जरें दुख देह भई सुख हीनी॥ मैं उलटी जु
करी विधि मो कहँ त्यों इनि हाउ लटी विधि
कीनी॥१४॥ खंडिता लछन दोहा॥ आवन कहि
आवैं नहीं आवैं प्रीतमु प्रात॥ ताके घर सों खं
डिता कहै सुकवि विधि वात॥१५॥ प्रछन्न खं
डिता यथा॥ आँखि निजो सरुतु न कानन तें
सुनियतु के सो राइ जैसे तुम लोक महि गात हो॥
वंस की विसारी काक ज्यों चुनत फिरौ जेठे सी
ठ सीथ सठई ठठा ठगात हो॥ हू रिइ रिकेरत
हू रीति रेरिगहि पाइ जानें नकु ठोर ठोर
जानि जीय पाये हो॥ काको घर घालिवे कों
कहा वसे घनस्याम घघ ज्यों घुसन प्रात मेरे ॥२५॥
घर आए हो॥१६॥ प्रकास खंडिता यथा॥ आ
गु के घू अखि आहरि और सी मानों मन हु उर

मोहरगी हैं। मोहनमोहीसी लागति मोहि
हू तेपर मोहन मोहि लगी हैं। मेरी सों मोसहू
मानकु वेगि हिये रससे सुकी रीति लगी हैं॥
मेरे वियोग कें तेज तची किधौं केसव काहू
के प्रेम पगी हैं॥७॥ प्रोषितप्रेयसी लछन दो
हा॥ जाकौ प्रीतम दैस अवधि गयो कोनहू काज॥
ताकौं प्रोषितप्रेयसी कहि वरनत कविराज॥
॥१८॥ प्रछंन प्रोषितप्रेयसी यथा॥ केसव कै
सें हू परतनु मन मिल्यो मन भांवतो भागु भलो
री॥ जानें को माई के हा भयो क्यों हू जो औधि
कौं आधौ कुघोसु टर्यो री॥ ताक हुतें न अ
जौं हू लिवो लैं तऊ मेरो मोहनु पाइ पर्यो री॥
कोठ हूतें हूतेऊ तेरी कलैरू हूतें विरहानल हू
न जर्यो री॥१९॥ प्रकास प्रोषितप्रेयसी यथा॥
औधि दै आए उहां उनि सौं यह भोजनु कै
अवही हम कै है॥ ताक हुतो अवलौं वह रा
इ कैं राखी वस्याइ म हू करि मै है॥ यो केहा
हनिकी टिग केसव जा कुन ही कोऊ जोइजु
के है॥ जानत हैं उनि आबि नितें असुवा
नि कसेव कु लौं बुरिवै है॥२०॥ अथ विप्र
लब्धा लछनं सोहा॥ दूती सौं संकेतु कहि

॥र॰प्रि॰॥ लैंनवपनवैआपु॥लेष्याविप्रलुआलि
52 येअनऔओसंतापु॥२१॥पूछंनवि
॥२६॥ प्रलब्धायथा॥सलसेफूलसुवासकुवा
सुसीभाकसीसेभएभोंनुसभागे॥केस
वैवागुमहावनसोजुरसोचटोजोन्हस
वेअंगसगे॥नेकुलाप्योडरनाहरसोंलि
सिनाइधरीकुकहूअनुरागे॥गारीसों
मोतुविरीविसुसासिगरेईखिंगारअगा
रसेलागे॥२२॥प्रकासविप्रलब्धायथा॥
देषतउदधिजातदेषिदेषिनिजुगातचं
पककेपातकेघूलिज्योहैयनाइकैं॥स
कलसुगंधधारिहूतिकाकोमारिपुनिफू
लमालतोरिडारिवीरावगारहइकैं॥लैलैदी
हसासतजिविविधिविलासआसकैसो
सासहूउदासचलीअकुलाइकैं॥सहके
संकेतसनोकान्हनसोबोलिऊनोमोसों
जोरेकरइनाहूनोंदुषुपाइकैं॥२३॥अभि
सारिकालछनदोहा॥हिततेंकैमदमदन ॥२६॥
तेंपियकोंमिलेजुजाइ॥सोकहियेअभि
सारिकावरनीत्रिविधिवनाइ॥२४॥अ

53 थस्वकीयाकोअभिसार॥ अतिसलज्जउ
गभरतिधरतिवधूनिकेसंग॥ स्वीयाकोअ
भिसाररूपरुमबनभूषितअंग॥ २५॥ प्रछंन
प्रेमाभिसारिकायथा॥ लीनैंहममोलनिअन
बोलैंआईआन्योमोऊमोहिघनस्यामघन
मालाबोलिल्याईहैं॥ देख्योहूहैऊभुजहू
देहअनदेखीपरैदेखोकैसेंबाटकेबोहा
मिनीदिखाईहैं॥ ऊंचेनीचेवीथिनकेखरके
कलिधारेपगसाहससगयंदगतिअतिसु
बसाईहैं॥ भारीभयकारीनिसिनिपटअ
केलीतुमनाहीप्राननाथसाथप्रेमजूस
हाईहैं॥ २६॥ प्रकासप्रेमाभिसारिकायथा॥
नैननिकीअतुराईवैननिकीचतुराईगात
कीगुराईनदुरतिदुतिबालकी॥ आपनैंव
रननिकोंचितवतिविचित्रचितचितैनी
ज्योंसोहैंसाथपुतरिकागुलकी॥ चंदकेस आ
मानचारुचाईसौंचढीफिरतिकरिकैंति
हारेमगनैंननिकोपालिकौ॥ कीजैंपयपा
नुअरुबैजेंपानप्रानप्यारेआईहैंजोंमा
ईअलबेलीग्वालिकालिहकी॥ २७॥ प्रछंन

र० प्रि० ॥ नगर्वाभिसारिका यथा ॥ लाड़िली लीके
54 लोरी लुरी के हूला लुलु के के हूअंग ल
॥ ३ ॥ गाइ कैं ॥ आगु तौ के सब के सैं हूलैन हि
लोगन देतिन देषकु आइ कैं ॥ वेगि ब
लौ उठि आई लिवा वन दोरि अकेली ये
हौं अकुलाइ कें ॥ भलैं हू गोकुल गांउ
मैं गोविंद की जैं गहू रनगाइ चराइ कैं ॥ २८ ॥
प्रकासगर्वाभिसारिका यथा ॥ चंदनु
चढाऐं चारु अंबर कौ उर हारू सुमन
सिंगारू सो हैं आनंद के कंद ज्यों ॥ वारे
को रिरति नाथ बीना मैं बजावैं गाथ म
गज मराल साथ बानी जग वंद ज्यों ॥ चौं
कि चौंकि चकई सी सोतिनि कौ हूतावली
सो तैं भई दीन अरविंद दुति मंद ज्यों ॥
११० तिमिरवियोग भूले लोचन चकोर फूले
आई ब्रजचंद चंद्रावली चढि चंद ज्यों ॥ २९ ॥
प्रछन्नकामाभिसारिका यथा ॥ उरझत उ
रग चपत फन चरननि देषत षिविधि ॥ ३ ॥
निसि वरद्दि सिंचारि के ॥ गनत न लगात
मुसलाधार सुनत न झिल्लीगन घोष निर

55 घोघजलधारिकै। मानतिनभूषनगिर
तपटफाटतनकंटकअटकि उरझरज
जारिकै। प्रेतनिकीपूछैंनारिकोंनपैतें
मीख्योयहजोगकोसोसाहअभिसार
अभिसारिकै॥३०॥ प्रकासकामाभिसा
रिकायथा॥ गोपवडेवडेवैठेअथांइनि
केसवकोरिसभाअवगांहीं॥ छैलतवा
लकजालगलीनिमैंवालविलोकिवि
लोकिविकाहीं॥ आवतिजातिलुगाईच
हूंदिसिघूंघटमैंपहिचानतिथांहीं॥
चंदसोआननुकाटिकैहांस्वलीमरुतुहै
कछुतोहिकिनांहीं॥३१॥ दोहा॥ केसवअ
हतीनिविधिवरनीस्वकीयानारि। परकी
या द्वैभांतिपुनिआठआठअनुहारि॥३२॥
उत्तममध्यमअधमअरुहियकहियप
विवेक॥ प्रगटतीनिसोसाधित्रियकेस
वजानिअनेक॥३३॥ उत्तमा ... लछन॥
मानुकरेंअपमानतेतजैंमानतेमानु॥ ज्यो
दैवेंसुखुपावईताहिउत्तमाजानु॥३४॥
यथा॥ होतुकेहाअवकेसमुझेंसमुझे

र.प्रि. 56 नतवैजवहेसमुझाए॥ एकसीवंकैनिमा
हभ्रनेकअमोलविवेकविकाए॥ आ
॥२८॥ निपम्योनजनावैजंजनमावधिलोउहि ॥३
जानिहौंपाए॥ वातेंवनाइवनाइकहेक
हैंलेउमनाइमनाइजौआए॥३५॥ अथ
मध्यमालछनंदोहा॥ मानुकरेंलघुदो
षतेंछोडेबडुतपनामु॥ केसवदाससव
बानिजकुताहिमध्यमावाम॥३६॥ म
लैंहूसुधेंनसीचितयोइहिकान्हकियो
लविलोलनिचकेतो॥ हाहाकेंसाहिरहे
पुनिकेसवपाइपरेतोपरेईरहेतो॥ हौं
तोयहेतवहीकीविचारतिहीतोगुमा
नुक्यौंपाहिधौंएतो॥ नांवीलटेंअह
पातरीदेहजोनैंकुवडीविधिआंबिनि
अध देतो॥३७॥ अथअधमालछनंदोहा॥ रूठै
वारहीवारजोटूटैवेहीकाज॥ ताहीसौं
अधमासवेकहिवरनतकविराज॥३८॥
यथा॥ काटौंकपटेजुकान्हसौंकीजै. ॥२९॥
रीबाटवेवोलकुबोलकसाई॥ फारें
सुघघटुओटअटैंसोईओछियफोरें

57 अधकौं जु धसाई ॥ केसव ऐसी सिषी
लिकौं मारो लिबेकें करें हितकी जु हसाई ॥
बारही बार कौ रूसनो मारे बहु असुवु
छ्वि वियोग बसाई ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ इहिं विधि
नाइकनाइका बरनहु सहित विवेक ॥ जाति
काल वय भाव ते केसव गनि अनेक ॥ ४० ॥
तजि तरुनी संबंध की जानि मित्र द्विजरा
जु ॥ राखि लेइ जु बभष ते ताकी त्रिय सौं भा
जु ॥ ४१ ॥ अधिक बर्न अरु घटि अंत्तिज
जन की नारि ॥ तजि विधवा अरु परजिता
रमिय जु रसिक विचारि ॥ ४२ ॥ यह संभो
ग सिंगार को केसव बरनी रीति ॥ विप्रलं
भ सिंगार की रीति कहौं करि प्रीति ॥ ४३ ॥
इति श्री मन्महाराजकुमार श्री इंद्रजी
त विरचितायां रसिकप्रियायां संभोगसिं
गार बर्ननं नाम सप्तम प्रभाव: ॥ ७ ॥ अथ
विप्रलंभ स्रंगार दोहा ॥ बिछुरत प्रीतम
प्रीतमा होत जु रस तिहि ठौर ॥ विप्रलंभ
सिंगार को कहत रसिक सिरमौर ॥ १ ॥

२.प्रि. 58 अथविप्रलंभभेद॥ विप्रलंभसिंगारको
चारिप्रकारप्रकास॥ प्रथमपूर्वानुरागु
॥२९॥ पुनिकरुनामानुप्रवास॥१॥ अथपूर्वा
नुरागलछनं॥ देषतहीं दुति संपतिहि
उपजिपरतुअनुराग॥ बिनुदेषें दुषुदे
बिये सोपूर्वानुराग॥३॥ राधिकाको प्र
छंनपूर्वानुरागयथा॥ फूलनदिषाउ
मलनफूलतहैं हरिविनु हरिकरिमाल
वालव्यालसीलगतिहैं॥ चवरचलाउ
ननविजनहलाउलगें केसरसुगंध
वाइवाइसीलगतिहैं॥ चंदनुचढाउजि
निताप साचढतितन कुंकुमनलाउ
अंगआगिसीलगतिहैं॥ वारवारवर
जति वावरीहवेंगी मारें आनि वीरानिबवा
उवीरविसुसीलागतिहैं॥४॥ राधिकाको
प्रकासपूर्वानुरागयथा॥ केसवकेसेंई
ठनडीठतडीठिपरेरतिहूँठकन्हाई॥ता ॥२९॥
दिनतेमनमेरेकोंआनिभई सुभई क
हियोंहनजाई॥ होइगी हांसीजो

५९। आसैं कहूं कहिं जानि हितहितु वकाम
आई ॥ केसें मिलोरी मिलि विनु पीर
सों मैं न तिन्ने हू हियें उरू माई ॥ ५ ॥ कृस
को प्रछंन पूर्वानुराग यथा ॥ एक समें व्र
षभान सुता सजनी गन में जननी संग वै
सी ॥ जीति उन्हें त्वितयो जिहि रीति सुप्री
ति हियें कहि जो इन तैसी ॥ ता दिन तें ज
गकी जुवतीनि की लागति केसव बात अ
नैसी ॥ यां हि फिर्यो चितु चक्र चहूं न क
हूं कुत देषियें वा मुष कैसी ॥ ६ ॥ कृस
को प्रकास पूर्वानुराग यथा ॥ भांति भली व्र
षभान लली जब तें अंषिआ अंषिआनि
सों जोरी ॥ भौं हव टाइ कै घूंडर पाइ षुला
इ लई हसि कें वस भोरी ॥ केसव ता दिन तें
हरि कैं न विलोकति के तो निहोरनि होरी ॥
लीलति हैं सव हौ के सिंगार अंगारनि
मों विनु चंद चकोरी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अवलो
कनि आलाप ते मिलि वे कउ अकुलाहि ॥
होति दसा इस विनु मिलें केसव वर्नो काहि ॥

र. प्रि. मांहि॥८॥ अथ दसम दसा सो है॥ अभिला
60
षसुचिंता गुनकथन तु स्मृति तउ द्वेग प्रला
॥३०॥ पु॥ उन्माद व्याधि जडता भये हो तु मरन पु
नि आपु॥ ९॥ अभिलाष लछन सो है॥ नैं
नबैंन मनु मिलि रहैं चाहैं मिल्यो सरीर॥
कहि केसव अभिलाष युय हु वरनत हैं कवि
धीर॥ १०॥ राधिका को प्रछंन ... अभिला
ष यथा॥ सुधि बुद्धि घटी दुति देह मिटी
दिनही दिन चाहियें बाट तिसी॥ कछू केस
व आपने पेट को पार तुरावत तिवें मुष काढ
तिसी॥ विसस्यौ सुष भूष सबा निसिनीद
परी षित चाहन आट तिसी॥ रागयो कघू
गांठि ते छूटि छबीली सु कान्हे ते डोलत तिउ
ट तिसी॥ ११॥ राधिका को प्रकास अभिलाष॥
जो कहों दे षै लगै दिषसाध रहि बावत ही
दिन ही दुजु पै हो॥ या ही मैं केसव देषि
वें बोलुन दोषि हो दे षि सषी अब मै हो॥ ॥३०५॥
पों उनि की दुरि देषि हों देह यों आपनी
देहन देषन दै हो॥ देषि वे को धहराव

61 तिमोहिमुहोंवकलाकथूदेषिसोलेहे
॥१२॥ इसकोप्रछंनअभिलाषयथा॥
पाइपरैवलिमोउमनोहरआपुनसमान
करेंअवताहू॥ देषेंअधानमसीहनकों
फिरिवारकथेंअनदेषैंहीमोहू॥ मोसौं
कहीसुकरक्योंवकैसेवकैसेंहूकान्हपत्या
इनभोहू॥ ऊटइंगेजुकहूकइतीहचितैतौ
हेनेंकुसिराइधौंबाहू॥१३॥ इसकोप्रका
सअभिलाषयथा॥ हेकोऊमाईहितहनि
कोपरजोइकहेंक्किहिवाइवहेहैं॥ न्याइही
कैसबगोकुलकीकुलटाकुलनारिहिना
उलहेहैं॥ देषिरीदेषिलगाइटगीइतसो
नोसोघालिजुआरहेहैं॥ कोहेंरीकोजैसें
जानतनाहिंविकालिहीकाकेमदेसेकहेहैं॥
॥१४॥ अथचिंतालछनंदोहा॥ कैसेंकेमि
लियेंमिलेंहरिकेसेंवसहोंइ॥ यहचिंताचि
तचेतिकेंवरनतुहेंसवकोइ॥१५॥ राधिकाकी
प्रछंनचिंता॥ आपुनऊंतनुआपनोहेतु
नदेषेंजाहि॥ आपुनऊतनुआपनौक्यों
मनुकरिहेंताहि॥१६॥ राधिकाकीप्रकास

र॰ प्रि॰ चिंतायथा ॥ प्रेममयभूपरूपसविसरसमेोसु
62 सोसुविरहविनोदपलिपेलियपतापविकें ॥
॥३१॥ तरलतुरंगअवलोकलिअनंतगतिरथम
नोरथरहेपैंदांगुनगविकें ॥ उरअोरपरी
जोरघोरघनीकेसोरासहोइआतिकोंनकी
कोहारेहियेलविकें ॥ देवतनुमैंगुपाल
तिहिकालउहिवालउरसतरंजकोसीवाजी
राबीरविकें ॥ ७ ॥ केसकीप्रछंनचिंतायथा ॥
केसवदाससकलसुवासकोनिवासुतनुकहि
कवभ्रकुटीविलासज्योसुछोलिहें ॥ कैसोहे
सुदिनुवडभागीअनुरागीजिहिमेरेद्रिगवाके
संगलागिलागिडोलिहें ॥ ऐसीहुहेंईसपुनि
आपनेकटासमगामरघनसारसममेरेउरओ
लिहें ॥ दीपकेसमीपनिसिरीपतिविलोकें
वहचित्रकीसीपुतरीसुक्योंहूहसिवोलिहें ॥
॥ ८ ॥ केसकीप्रकासचिंतायथा ॥ राधिका
कीजननीसोंजननीकोऊक्योंहूरुवपेंवरवातस
दावें ॥ देवकुमारसेगोपकुमारतिमानुरेदेवू ॥३१॥
षभानवुलावें ॥ केसवकैसेंहूवालभलीवह
मालसुमेरेहियेंपहिरावें ॥ तोहिसखीसम
रेंसंगताकेंसुक्योंयहवातसवैवनिआवें ॥ ९ ॥

63 अथगुनकथनदोहा । जसगुनगनगनिदेह
दुतिबरनतेबचनविसेखि । ताकेज्ञानकुगुन
कथनुमनमथमथनसुलेखि ॥ २० ॥ राधिकाको
प्रछंनगुनकथनयथा । भारतिसहितनितके
सवकुवरकान्हकेवलअकारतिनपतिसोसु
मानियें । छुवतचंपकपातुकुमिलातजातुतनु
अतिहरबितगातुहरिजेकोंजानियें । कोमलसु
बाहुजुतप्यारेकेपरमपानिकंटकफलितनाल
नलिनवखानियें । लोचनविसालचारुमदन
गुपालजूकेमदनसरनिदरसनरसहानियें ॥ २१ ॥
राधिकाकोप्रकासगुनकथन । खंजनहेंमनर
जनकेसवरंजननेंनकिधोंमतिजीको । माठी
सुधाकिसुधाधरकीदुतिदंतनिकीकियोंदाडि
महीकी । चंदुभलोमुखुचंदुकिधोंसवीसरति
कामवधीकान्हकीनीकी । कोमलपंकजकैपर
पंकजप्रानपियारेकोमूरतिपीकी ॥ २२ ॥ हस
कोप्रछनगुनकथनयथा ॥ जोकहोंकेसवसोम
सरोजसुधासुरअंगनिदेहदहेहें ॥ दाडिमके
फूलश्रीफलविद्रुमहाटककोटिककष्टसहेहें ॥
कोककपोतकरीअहिकेहरिकोकिलकीरकु
चीलकहेहें ॥ अंगअनपंवालियकेउनिकी
उपमाकहंवेईरहेहें ॥ २३ ॥ हसकोप्रकासगुनक

र॰ प्रे॰ 64 नयथा॥ लोचनवीचनु भोरु चित्त ठेको
केसव क्यों हू न जात तिन काटो॥ मान कु मेरैं गाढ़
॥३२॥ अनुराग निकुंकुम पंककलंकित गाटो॥ मेरी
यैं लाल रहो तनुता अनुपौं दुति नाल निचो
लकी वाटो॥ मेरैं हमा नो हियेक हूं संघति
लै है अरविंद हियें मुख भाटो॥ २४॥ स्मृति लछ
न दोहा॥ आन [illegible] थनसुहाइ जहं भूलि जाइ
सब काम॥ मन मिलिबेकी कामना ताहि स्म
ति है नाम॥ २५॥ राधिकाकी प्रछंन स्मृति यथा॥
बोल्यो सुहा हूं न बोल्यो हूं स्यो अरु हेर्यो सुहा
हूं न दुख्यु बन्यो सो॥ नीकी यों बात सुनें समु
झैं न मनों मनु काहू के मोह मन्यो सो॥ केसव
दंछतियों उर मै मति मंछ भयो गुन गूढ पन्यो
सो॥ कोकेरै साजु बनावे को वानहि याकों के
धूं चितु चाकु चन्यो सो॥ २६॥ राधिकाको प्र
कास स्मृति यथा॥ मेरे मिलो अँहरी चेमिलिहौं
मनमोहन सों मनु मोहिन रीजें॥ मों न हरा मों
न वनें न कैधूं अव क्यों मन मान रु केरस भीजें॥ ॥३२॥
अैसें हाके सब कैसें जियों अहो पानन बाढ़ु
तो पायो न पीजें॥ मानि हैं कोऊ कहा करिहौ
तव सोचुन जै तौ सकोचु न कीजें॥ २७॥ रस
की प्रछंन स्मृति यथा॥ घो रिय नो घनसार

घर्‍यो घनस्याम सुचंदन छै तनु फूल्यो ॥ केसव
कुंजको फूलन छ्वैते फूति फूल भयो सुभ फूलनि
फूल्यो । भूलै से ओलत बोलत हू उत जात कितेंम
नु संभ्रम भूल्यो । जानति हौं यहका हूकैं आजु
मनोहर मैन हिंडोरनि फूल्यो । २९ । हर्स को प्रका
स स्मति यथा । बोमन बासु भए विसु केसव अस
न अंसनिकी गति लीनें । चंदन बांहिनी त्यों छ्वितु वा
हं नचंद्रक चंद छ्विता रसभीनें । पानन पाइन
पानु करें कछू हास विलास विदा करि दीनें । ऐ
सी हैं गो कुलको कुलकी जिहि गोकुलनाथको
हाटंगकीनें । ३० । अथ उद्वेगदसालछनं दोहा ॥
सुखदायक कुंजात जहं सुखदाइक मैन पास । सो
उद्वेगदसा सु सहजान कु केसवदास । ३० । राधि
का कोप्रछंन उद्वेग यथा । चंदुन हो विषकंद है
केसव राहु पहै गुन लीलि न लीनौं । कुंभज पाव
न नोति कि पावन धोषें पीयो पछ्वि जानन री नौं ॥
यासों सुधा धरु सेव विष हरनाउ धर्‍यो विधि
है बुधि हीनौं । सरसौं माई कहा कहिये यह पा
पी जु आपु बराबरि कीनौं । ३ । राधिका कोप्रका
स उद्वेग यथा । केसव कालि ह विलोकि भंजी
[illegible] स्या जु छ्वि लोकें छिनो सु मोरेंग । बोसर
वी सछ्वि के विसुमी हियेराति जु न्हाईकी

र॰ प्रि॰ 66 जोतिजरैंजं ॥ भूमितेपालिकपालिकेतेभुवन्ना
लीकरेरिकलालिकरैंग ॥ भूषनदेकुकछुवृज
॥ ३३॥ भूषनदूषनदेहकोंहरिहरैंग ॥ ३२ ॥ रूसको
प्रछंनउदाहरनयथा ॥ मेघनिज्योंहसिहंसनेहे
रतहंसनिज्योंघनुरूपुनपावैं ॥ कंजनिजोंचित
चंदनेचाहतचंदजोंकंजनिक्योंहूनछीवैं ॥ ता
लतेवागनिवागतेतालनितालतमालकीजा
तिनसीवैं ॥ केसीहैंकेसववैजुवतीमुनिऐसी
दसापायकीपलुजीवैं ॥ ३३ ॥ रूसकोप्रकासउ
दाहरनयथा ॥ सोचिसबीभरिलेतविलोचनकों
पतदेषतफूलेतमालहि ॥ भूलेसेडोलतवोल
तनाहिनेंवागगएकिधोंतेरेहीतालहि ॥ देष्यो
जोत्वाहतेदेषिनआवतिऐसेमेंहोनदिषौं
ऊंरीलालहि ॥ आजुकहादिषसाधलगीजु
वदेष्योकेधूनमुहाहगुपालहि ॥ ३४ ॥ प्रला
पलछनंदोहा ॥ भेवतुरहेंमनुभोंरज्योंहेंत
नेमनपरितापु ॥ वचनकहेंप्रियपछसोंता
सोंकहतप्रलापु ॥ ३५ ॥ ताथिकोप्रछंनप्र ॥ ३३॥
लापयथा ॥ चेलुनहांसीनबोरिझठाऊन
हेतुनवैकहियोकपैंतेसों ॥ लैनोनदैनोंनहे
लोऊभलोऊनेनातोनगोतोकहाकहोंतोसों ॥
आलिदयोमुषमैंडषुकेसवकैसेंहसोंरी

67 कहा कहिहि कोसौं । नैंन भरा भरि ग्वालि कहैं कों
री देख्यो तैं कान्ह कहा कह्यो मोसौं ॥ ३६ ॥ लछि
ता को प्रकास प्रलाप यथा ॥ मकरंद छंद ॥
आली लिके माझ मिली कुती बोलति जानैं को
कान्ह धौं आलकसां तें । सुटो ठहि डीठि पस्यो
न कछू सटठो कहा हा हा छिपी छिकी घांतें । गई
गड़ि लाजनि हाहा यहे तो उठी जरि के सब
कौं पनी पौं तें । इतारि समें न कछी के व कहू पै रही
व खिहैं आंखियानि कै नीं तें ॥ ३७ ॥ रूस को प्रछं
न प्रलाप यथा ॥ नील नि चोल दुराइ कपोल वि
लोकत हा हा कियें आलि केतो हा । आनि परी ह
सि बोलत भीतर भागि गई अवलोकित मोही
वृझि वे कौ जक लागी है कान्ह हि के सब कें ह
चित्रपल लिलो हा । गोरस को सौ वृवा को सौ तो
हि किवार लगी कहि मेरा सो कोहा ॥ ३८ ॥ रूस
को प्रकास प्रलाप यथा ॥ मोहन मेरी खिका सौं
हा सुधन सार कैसो वासु मुख रूप का सी रेखा
अवरात हैं ॥ केसो दास वनी तो लिखें नी सी व
नाहू गुहा आमें मेरे मनोरथ मुनि से अन्हात हैं ॥
नेह उरझै से नैंन देखिवे कों विरुझै से विमुखी
सी भोहैं उझकै से उर जात हैं । दखासी बनाई
विधि कौन की हे आई वहते रै घर आई आजु

॥ र॰ प्रि॰ ॥ 68 कहिकैसीबातहैं ॥ ३९ ॥ अथउन्मादसेहा ॥
तरकिउठैपुनिउठिचलैचितैरहैमुहदेखि
॥ ३८ ॥ सोउन्मादजुगाबईसेवैहसैंबिसेखि ॥ ४० ॥
राधिकाकोपछंनउन्मादयथा ॥ केसवक्यौं
कतिसीचितवैंछतियाधरकैतरकैतकिछां
हा ॥ बूझियेंओरकेहैंकछूओरओरकीओ
रभईपलमांहा ॥ उठिलागीकिधौंवाइलगी
मनुभूलिपर्योकिकर्योकछुकांहा ॥ घूंघट
कीघटकीपटकीहरिआजुकछूसुधिराधिकै
नांहा ॥ ४१ ॥ राधिकाकोप्रकासउन्माद ॥ केस
वसुबुद्धिसिद्धिहरितुमबिनुबिथाअगाध
राधिकहिबाढी ॥ छूटीलटलटकतिकटितट
लकुचितवनिनीठिडीठिकरिगाढी ॥ तरकति
तकितोरतितनुअतिअपारउपचारलिडा
ढी ॥ सकसकातिलैलैसासअचेतसुचेतऊ
प्रेमप्रेतगहीगाढी ॥ ४२ ॥ कृस्नकोप्रछंनउन्माद ॥
गूढअगूढप्रकासतबातनिलोकअलोककी
बातसरासी ॥ सेवतहैंकबहूंहसिगावतनाच
तलाजकीछाडिछरासी ॥ काहूकोसोचुस ॥ ३८ ॥
कोसुनकेसवदेखतआवतहैहमरीसी ॥ बाम
कीबाहूकिकामकीबामकिहैहरिकोमतिका
हूहरीसी ॥ ४३ ॥ कृस्नकोप्रकासउन्मादयथा

69 सजलचकितचितवतिचितचहूदिसिचाहि
चाहिरहैंमुषचपलचलतधाइधाइ।सोचत
सेमनुमनकंपततपततनुकेसोराइरोवतह
सतउठैगाइगाइ।चलेहिदिषाउतोहिंदेषत
हीअ्येमोहिभयोसुकहनआईतोसेंआलि
अकुलाइ।जैसेंकैधूआकुवाकुवकतहैंहरि
आजुतैसेंजिनिनाउमुहकाहूकोनिकसिजाइ।
।४४।अथव्याधिलछनदोहा।अंगवरनवि
वरनजहंअतिऊंचेउस्वास।नैननीरपरिता
पवकुव्याधिसुकेसवदास।४५।राधिका
कीव्याधियथा।वैनतजोंउनिवैनतेवोलैं
नवैंनविलोकैतबुद्धिभगीहैं।वैनसुनेंसमु
झैनतवातहिप्रेतुलग्योकिधोंप्रीतिजगीहैं।
केसववेतोहितोहिरटैंरटतोहिहूतेंउनहीकी
लगीहैं।वेभषेंपानिनपान्योनतसुतेंकान्ह
ठगोकितकान्हठगीहैं।४६।केसवकीव्याधि
यथा।हूंउनिकेतनतापनितापीयेंइहां
इनकेअसुवानिअन्हैयें।हूंउनिकेउडिजे
येउसासनिइहांइनिकेउपचारजुडैयें॥
केसववैनरलीलनराधृषभानललीपै
निसानुंनपैयें।एकहीवारउइनिकहा

र० प्रि०
70

भयोमाईरीच्चलिदेखेंउरैयें॥४७॥ जउता
लछनसोहा॥ मलिजाइसुधिबुधिजेहंउ
॥३५॥ बसुबहोंहिसमान॥ तासोंजउताकेहतहैं
केसवदाससुजान॥४८॥ राधिकाकौप्रछन्न
जउतायथा॥ चरेउपचारचरीविपरीसिप
रतेचराईचरोतनुछीजैं॥ ऐसेमैंओह
कियेतेकछूउपजैतोसकेलिकहाहमलीजैं॥ ॥
देखतहीयहकामकलीकुमिलानीयेंजाति
कहाअबकीजैं॥ कोनपैआंउकहाकरौकेस
वकेसेंजियेंयहकौंलमजीजें॥४९॥ राधि
काकौप्रकासजउतायथा॥ अखियांनिमि
लीसखियानिमिलीपतियांवतांआनिमिली
तजिमोनें॥ ध्यानविधानमिलीमनहामन
ज्योंमिलैरंकुमनोमयसोनें॥ केसवकेसें
हूवेगिमिलौतनहूंहेवहैहरिजोकछुहे
नें॥ पूरनप्रेमसमाधिमिलेंमिलिजेहेतुमें
मिलिहोंतवकोनें॥५०॥ हैमकौप्रछन्न
जउतायथा॥ पलनहीपलसीतलहोतुसरीर ॥३५॥
विचारसवेउपचारनिधानें॥ ओकरियें
तनुमंडनुचंडनुचित्तकछूउपसुछुनआनें॥ ॥
केसवकान्हसुनेंसमुझेंनहीवूझियेको

७१ नहिकोयहमानैं ॥ योगुलियोंकिवियोगुहै
काहूकोलोगुकहाइनिरोगनिजानैं ॥ ५१ ॥
करुनकीप्रकासजडतायथा ॥ कान्हकेआ
मनवासनहालनकुतासनभातकोंप्रासनुकी
जैं ॥ केसवइंद्रियसोधि सबैमनुसाधि
समाधिनिकेरसभीजैं ॥ जोलौंभएहरिसि
द्धप्रसिद्धनतोलौंविलोकिअलोकुनलीजैं ॥
द्वाकरैतपुतोलगिवेबरदानुनजोजीय
दानुतोदीजैं ॥ ५२ ॥ मरनलछनदोहा ॥ बनैं
नक्योंहूमिलनुजहँछलबलकेसवदास ॥
पूरनप्रेमप्रतापतैंमरनुहोइअनयास ॥ ५३ ॥
मरनुनकेसवदासपैबरन्योजाइनमित्र ॥
अजरअमरजसुकहिकेहोकैसैंप्रतुचरित्र ॥
॥ ५४ ॥ रतिउपजैंरवनीनिकेंपहिलैंकेसव
दास । तिनिकीइंगितुदेखिसखिकरतुसुप्रे
मप्रकास ॥ ५५ ॥ अतिआदरअतिलोभतेंअ
तिसंगतितेमित्त ॥ साधनिहूकेहोतहैंकेसव
चंचलचित्त ॥ ५६ ॥ सुभगरसादसमेंकहीउप
ज्योपूरवरागु ॥ जिहिविधिउपजैंमानुमनबर
नोसुनहुसभाग ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमन्महाराज
कुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां

र॰ प्रि॰
72

विप्रलंभसिंगारपर्वानुरागवर्णनं अष्ट
मप्रभावः॥ ५॥ अथमानवर्णनं दोहा॥ प्र
॥३६॥ रवप्रेमप्रतापतेउपजिपरतुअभिमानु॥
ताकीछविकेछोभसोंकेसवकहियतुमा
नु॥ १॥ मानुभेदलछन॥ प्रगटहिपीयप्र
तिमानिनीगुरुलघुमध्यमुमानु॥ प्रगट
हिपीयप्रियानिप्रतिकेसवदासप्रजानु ॥
॥ २॥ गुरुमानुलछन॥ आननारिकोवि
न्कुलबिअरुसुनिश्रवननिनाउ॥ उपज
तुहैंगुरुमानुतसोंकेसवदाससुभाउ॥ ३॥
राधिकाकोप्रछंनगुरुमानुयथा॥ आजु
मिलेवृषभानकुमारिहिनंदकुमारवि
योगुविलैकें॥ रूपकीरासिरझ्यौरसकेस
वहासविलासनिरोसुरितैकैं॥ वागके
भीतरदेखिहियेनभनैनवाहरहीसु
हतैकैं॥ फूलहीमैंअमुभलिमनौंसकुचे
मरसाहिहवेडचितैकैं॥ ४॥ राधिकाको
प्रकासगुरुमानुयथा॥ वेजतिहोगोपी ॥३६॥
गुपालहिआजुकेघरुसिकैंगुनगाथहि॥
औसेमैकोहूकौनाउसषीकहिकैसैधौं

73 आयोकह्योव्रजनाथहि । बातिबनावतिहै
जुवतिरीसुरहीमुहकीमुहहाथकीहाथहि ॥
आतुरह्वैउतनिआंखिनितेंअसुवानिकेस
अधरानिकेसाथहि ॥५॥ अथ हसनको
प्रछन्नगुरुमानुयथा ॥ ऐसीऐसीरति
रावेंसौंहहनिकेसांचेस्याम देषोआनिवांचि
केंधौंकौनकीरचीठीहैं ॥ सुनकुसभागपाई
रावरीहीपागमहिकागदकेरूपकह्यआगि
कीआगीठीहैं ॥ जानतिहौंऔरहीभागपायोहै
जनमुजगलोकमेंअलोकनिकीबीथीतुमडी
ठीहैं ॥ काहेकौंकहावतकटुककालकूटसीये
कह्योहरिहरेंहसिहमकौंतोमीठीहैं ॥६॥
हसकोप्रकासगुरुमानरोस ॥ लोकलोक
उलंघिकछुप्रियाकहेंजबवैन ॥ उपजतुहैं
गुरुमानुतहप्रीतमकैउरअैन ॥७॥ आप ॥यथा॥
नैंसोंआपनेहीआगेंकहियतुकिधोंबोरि
कैंबजानेबोरितिमेंबोलियतुहैं ॥ डीठियेंतो
रोकियतियोंरकहूंनारकेसोओकफकहानेंन
लैंछुरीनिछोलियतुहैं ॥ वेईघनस्यामुजि
निबिनुघनीघरनीनिघरीकमेंघनेघन

र॰ प्रि॰ 74

॥३७॥ सार आलियतु हैं। बोलति हों कैसें औसें बो
लैं जैसें बोल बोलियत मोल हूलाए सों औसे
बोल बोलियतु हैं। ८। अथ लघुमानु दोहा॥
देषत काहू नारि त्यों देषै अपने नैंन। तहं उप
जैं लघुमानु कैं सुनैं सषी पे बैंन। ९। राधिका
को प्रछंन लघुमानु यथा। कान्ह तिहारी बाप्रा
न प्रिया के अपान सपान सबै हम माहं। मान
कियें अपमानु अबै यह मान सपै अनुमानत
नाहं। सुबुदु बुनके सबूजें तिपरें समुझें
रिसहां सात हां अकनाहं। पोंबिन री सिय
राबिनताती हैं ज्यों बदलें बदलो लिक छांह॥
॥ १० ॥ राधिका को प्रकास लघुमान। झूठे हूं
न रूठि जैरी ई हसों धूतौ कहाव नैंकडी ठिपी ठि
पी ठिदेत ईठ कोन के अली। कान्हि के तो मोसौं
घालिने दलाल लालि करें कान्हि हलन आई वा
लि जो पै तऊ ती भली। आजु हजु बीच परी बी
चु पारि वको माई आन रंग अंगा जिय ज्यों कने
र की कली। लेरे हा केह षी कोऊ सा बिहैं गुबुझि
षेरी दबि पैं गु आं बिसाबि बूझि बेकी कांचली॥ ॥३॥
॥ ११ ॥ कृष्ण को प्रछंन लघुमानु यथा॥ बो
लि ज्यो आए त्यों बोलत नाहिनें मो ते कहा के

धूखकति हारी। केसव के सें हूदर वैं सुमें विनु आनें
कहा कोऊ जो सौ विहारी॥ प्रीति सिराइ नजान तछा
इन हाथ हमकी भांति निहारी। कांधी हारा सबहि
बा हतबाल्यो सु अंततऊ तुम कुंजबिहारी॥ १२॥ ल
मको प्रकास लघुमान दोहा॥ पीयसौंक छो करै
नजहां प्रिया कोन हूकाज। उपजतु है लघुमान तहां
वरनि कहें कविराज॥ १३॥ यथा॥ आगे कहा करि
है अब हातौ हूतौ दुजुरी नौंक छो विनु मौनें॥ केसव
कौन हू लाज के लाडते भूलि गई तो भई हित हीनें॥
भेंटें न ही भरि अंक ललाभरि जीभ नबोलैं जेबोल
नवीनें॥ देखें न ही कब हूं भरि आंखिनि आजु ही कें
सें चलैं चितु लीनें॥ १४॥ मध्यममान दोहा॥ बातक
हत त्रिय और सौं देखे केसवदास॥ उपजतु मध्यम
मानु तहां मानिनि कें सविलास॥ १५॥ यथा॥ कहें
कान्ह कहा सिगरी निसि नासी सुतौ तुम ही कहें बा
हुत हो॥ तनमें तनु रेख लिखी किहि केसव कंटक
कौं न न गाहत हौ॥ कछू राती सी आंखि कहा भई ता
सौ तिहारे वियोग के दाहत हौ॥ हियवं चक रीति स
धीजब रंचकलाइ लई उरनाहत हौ॥ १६॥ राधिका
को प्रकास मध्यममान यथा॥ सखि ज्यों उनि कौंत
वकावति मोहत्यौं आई वकावन हूं गई॥ अबया
हीतें तो सकु बात कछू कहि वे हूकी तोन कही परई॥
कहि केसव आपनी जो घउ धारि कैं आपुरी ला

र॰ प्रि॰ 76 जनिकौं मरई । कै तो सब ते हरत हरि सौं हूव हौं उ
कहा हरि ते हरई ॥ १७ ॥ दोहा । जहां न मानें मानिनी
॥३८॥ हारें पाउ मनाइ । उपजत मध्यम मानु तहां प्रीतम
कें उर आइ ॥ १८ ॥ इसको प्रछंन मध्यम मान यथा ॥
वार वार वरजी मैं मार सम रस मुख आरसी लै र
वि मुख मार सम मैं वारि है ॥ सोभा के निहारें त्यों निहा
रतिन मैं कहत हारी है निहारि सब कहा काहू वारि
है ॥ मुख को निहारें जु न मान्यो सुभली करी वके सो
राइ सौं जो तमन मोरि है ॥ नाह के निहारें कैनि
मान हि निहारत तिहों नेह के निहारे पिरि मोहि जु
निहारि है ॥ १९ ॥ केसन को प्रकास मध्यम मान ॥
मान ही मानत मानि निके सब मान सते कछु मानु
टरैगो । मानु रहे सु जो मानें नहीं परि मानु न वें अ
रि मानु भरैगो ॥ हूहो सहेली समानत वै जब सो ति
नि मैं अपमानु करैगो ॥ आपु मनावत मान हिरी
व कहूं त्यों जु मनावन तोहि परैगो ॥ २० ॥ दोहा ॥ राधा
राधारमन के वरनें मान समान ॥ तिनिकौं मान मना
इवो के हियतु सुनहु सुजान ॥ २१ ॥ इति श्री मन्महा
राजकुमार श्री इन्द्रजीत विरचितायां रसिकप्रिया
यां मानवर्णनं नवम प्रभावः ॥ ९ ॥ अथ मान मोच ॥३८॥
न दोहा ॥ मानु तजाहि प्रीतम प्रिया कहि केसव क
रि प्रीति । वरनि सुनौं ज्यों सुनहु सब जे मैं सुनी चतु
रीति ॥ १ ॥ साम दांनि भनि भेद पुनि प्रणति उपेक्षा

77 मानि । अरु प्रसंग विध्वंस सुनि रंड होइ रस हानि
॥ २ ॥ अथ साम लछन । ज्यौं क्यौं हू मनु मोहियै
छूटि जाइ हि मानु । सोई साम उपाव कवि केसव स
मझु जानु ॥ ३ ॥ राधिका को साम उपाउ यथा । केसव
दास सहास किये आसर है सुख की दुषतानि नरी जै ॥
ताहू सौं रोस सुन मानियै मानि लिभालि हू आपनौ मा
नि गुली जै । हौं तुम ही तुम हौं सुनि सुंदरि मूरति है
जिय एक ही जी जै । मानु है भेर कौ मलु मरु अप
नै सह सौं सपने हू न कीजै ॥ ४ ॥ कृष्ण को साम उपाउ ॥
यथा । कहि आवति है औ कहा बत सौं भरही तौ ता
कि सबै हम सौं हा । तिहि पैडें कहू खलि वै कब हू
जिहि कौं है भगै पग पीर दुकौ हा । प्रीति कुमेंडे
मोकी जै यई सम होति तुम्है अपराध सरौं हा । को
जै कछू यह जानिकै केसव हौं तुम ही तुम तौ हरि
हौं ही ॥ ५ ॥ अथ दान लछन दोहा । केसव कौंन हू
ब्याज कछु दै जु छुडावै मानु । ब्व्यन रचन मोहै मन
हि तासौं कहियत दानु ॥ ६ ॥ जहां लोभ तैं रतनु लै
छाडै मानिनि मानु । बार बध के लछन हि पावै तरै
प्रमानु ॥ ७ ॥ यथा । कोमल अमल दल दीने हैं कम
ल भव अरुन अरुन प्रभुजे कौं सुभ साईयै । केसो
दास सोभाधर सधर सुधा के धर मधुर अधर
उपमा तोई न पाईयै । उरज मलय सैल सील स
म सुनि देखि अलक वलित पाल आसा उरआ

र॰ प्रि॰ 78 ईयैं । निपट निगंधु यह हाल बंधुजीव को सुवास
नु सुगंधु भयो नैं कु ग्रीव नाईयैं ॥ ६ ॥ रूसन को स
॥ ३८ ॥ न उपाउ यथा । हंसत तिहँसत तिआइ आनि ए
क गाथ गाई कह ऊके न्हाई याको भाव समुझा उ
इ कैं । पीवै को अधर मधुर इंपतिा केही वार र
न कर जथल रीज हि वताइ कैं । यह पद रिंभ नुक
हावै को नुके सो राद मेरी सौ जो मो सौं तुम राख
उ कुराइ कैं । राधिका कौं अधिकाई कहा कहौं
लीनो आजु आपनौं पिया रो पी उ आपु हा मनाइ
कैं ॥ ७ ॥ यथा ॥ मस गयं दनि साथ सरसीरुहिं धाव
र जंगम जंतु विदारयो । ता दिन ते कहि केसव
वेधनि बंधन कैं बहु धा विधि मारयो । सो अपरा
ध सुधारन सो धि हियैं इहिं साधन साधु विचा
रयो । पांवन पुंज तिहारो हियो यह बात तु हैं अ
वतार विसारयो ॥ ८ ॥ भेद सो पाउ लछन दोहा ॥
सुख दैं के सब सावि नि कहु आपु लेइ मनाइ ॥ तब
सुख उपावैं मान कौं धरयो भेद उवनाइ ॥ ९ ॥ राधिका
को भेद उपाउ यथा । के सब धाइ रखवा सिनि तो हि
सखी सकुचैं सब आपनी घातैं । मोहि तो माई ॥ ३८ ॥
कहैं हा वनें अब वांधि रई विधि तो कह तातैं ।
नैं कुहूरै हरै बोलि वलाइ ल्यों हौं डरपौं गहि जा
हिं न जातैं । माखन सो मेरे मोहन को मनु काठ सी
तेरो कठेठ वियेवातैं ॥ १० ॥ रूसन को भेद सो पउ उ यथा ॥

79 कौंहूकघोहरिहूठिरहेतवतेवऊबुद्धिवितर्कैवढावैं॥
सोधिसवैश्रपनोसोरहोधनुमातुरहैंसुऊपाऊनपा
वैं॥ऊहांयहातिहूहायहकेसवजोऊहूश्रोरजरे
मुऊावैं॥पूछतिहौंपायप्यारीतिहारीसुमानुकरैं
किमनावनश्रावैं॥१३॥प्रणतिलछनदोहा॥अति
हिततेअतिकामतेअतितिअपराधुकिजानि॥पाइ
परैंधीतिमप्रियातासौंप्रणतिवषानि॥१४॥राधि
काकौंप्रणतिअतिहिततेंयथा॥तेंचितयोजुन
सधैंतऊप्रेमककैंपायपाऊगघोहे॥मोहिवि
लोकिविलोकिश्रलीनिश्रलोकुप्रवाहवघोहे॥
पघरतिहौंसवासासहघैतिनुश्रोहसवैहोये
हतुरघोहे॥कान्हहिश्रातमनावनसोमैंमानु
किधोंश्रपमानुकघोहे॥१५॥राधिकाकौप्रण
तिअतिकामतेयथा॥नबोलतिश्रापुबुलाएैंहूं
८२ बोलिकहालगीमोहिकहाश्रैंहौमारन॥सोपरस्यो
पाइसमुझैसबासवदेतिहैंज्योजुवतीजिहिकार
न॥हहुछाडिकैंकौंऊनहलगाऊकहालगीश्रै
हिश्रकासुनिहारन॥कौंनेंभागनुहैहिनाहिन
चैतहालगीकिधूऊलहुपारन॥१६॥राधिकाको
प्रणतिअतिअपराधतेयथा॥केसोदासऊह
सभईहासाहहसाहुघुघोसुभल्योरी॥रातिभई
श्रथरातिकहूंलौंहियोवऊभांतिवयनिकल्योरी॥

र. प्रि. ८०
धाइरहीसमुझाइसखीनिहूंकेसिखऐतेमधून
मलोरी॥ काहेतेमान्योनमानैनितोलगिजोलगि
॥४०॥ नौऊनपाइपलोरी॥७॥ दोहा॥ प्रियहिमनावै
पाइपरिप्रियापरमुहितुमानि॥ नाअपराधुन
कामतेबरनतहाससुहानि॥८॥ हासकोप्राप्त
तियथा॥ नीरहितोबिनुमीनसरैंबरमानकेंबी
रहिकेजीयजीजें॥ जोबिनुऔरसुहाइनकेसब
ताहिसुहाइसुतौसबकीजें॥ जोलगिमोपगला
गतहेसुलगीपगअंकेलगाइनलीजें॥ हौंसि
षऊंआपनेंसपनेंहूतोआवतलछिकिवारन
दीजें॥१९॥ अथउपेषालछनं दोहा॥ मानुमु
चावनवाततजिकहिजेंऔरप्रसंग॥ छूटिजा
इजिहिमानुसोकहतउपेषाअंग॥२०॥ राधि
काकहउपेषायथा॥ चपलानचमकतचम
कहथ्यारहनिबोलतनमोरवंद्रासपनसमाजके ॥
जहंतहंगाजतनबाजतरमामेंराहदेतनदिखाई
दिनमनिलीनेंलाजके॥ चलिचलिवहमुषीसपा
मलेसबापेवेगिसोषकेजुकेसोदासआरिसुष
साजके॥ चढिचढिपवनतुरंगनिगगनघनवा ॥४०॥
हतफिरतवंदरओधातमरोजके॥२१॥ हासकहैं
उपेषायथा॥ केसोदासदिनुरातिकेतुकीकी
भावेंभांतिजियमेंबसतिजातिनेंननिमेंमलिनी॥

माधवीकौपीयेंमधुसरुतुनअंधककूसेवतसेव
तकहीसेईगंधफूलिनी॥ औरैंहौंकहतिवातका
हेकोहेकौंलेजातजातऔसैंतोबिस्याइहसुजुहेइ
मनमलिनी॥ देखोंनहीप्रांनपतिनिलजअली
कीगतिमालतीसौंमिल्योवाहैंलीनैंसाथअलिनी
॥२२॥ अथप्रसंगविध्वंसरसोहा॥ उपजिपरैंभय
चित्तभमुभूलिजाइ जिहिमानु॥ सोप्रसंगविध्वं
सकविकेसवदासवषांनि॥२३॥ राधिकाकोप्र
संगविध्वंसयथा॥ केधौंनकेसवकामकेकिंकर
बोलतडोलतदेतदुहाई॥ कामनिसायरुकांमि
निकोउरिसाइगौताकेहूं हूहैरिसाई॥ गाजति
नाहिनैंमेघघटायरुवाजतिडोंडीसरासुघराई ॥
मोरुभजैंफूरिकोबोलअबोलोमबोलोअबैबलि
बोलीकन्हाई॥ २४॥ कृस्नकोप्रसंगविध्वंसयथा ॥
कोकलिकीकारिकाकहतुकाहूसारिकासौंकुरिकु
रिहितुचितुचोंगुनोंचढायोहैं॥ सकिरहसकुचति
वापुरीसुकीतौकहिकाहूसौंसकैनरहदुषनिडढा
योहै॥ उठिचलोंप्याउकीजेंअबकेमनाइहीजैंनी
केहीमैंकेसोराइकलकुंबढायोहै॥ मानतुनातें
परउलटीमनावेंहऔसोईसयानुस्यामसुकै
हिपढायोहै॥२५॥ सोरठा॥ देसकालबुधिवचनते
कलधुनिकोमलगानु॥ सोभासुभसौंगांयते

र० प्रि०
82

॥४१॥

सुबहीं छूटतु मानु ॥२६॥ यथा ॥ घनन्हि की घोर
सुनि मोरनि को सोर सुनि सुनि सुनि केसव अला
पुअली जन कौं ॥ संभ्रिमि कीरम के देखि दीप की
दीपति देखि देखि देखि सुभ सेज मदन सुवन कौं ॥
कुंकुम की वास घनसार की सुवास सुभ बेफूलनि
की बासु मन फूलि कैं मिलन कौं ॥ हंसि हंसि मि
लै ऊँ अनही मनो आवें मानु छूटि गौ एक ही वार
राधिका रवन कौं ॥२७॥ सोरठा ॥ इहिं विधि मानु छु
आवही आपुसमें नरनारि ॥ पलपल प्रीति बढ़ाव
ही केसव दास विचारि ॥२८॥ प्रियान प्रीतम सों
करै अति हठु केसव दास ॥ वेऊ त्यों हा यन आंव
हो जो हूं औं हिडदास ॥२९॥ बारही वारन की जई
वार कवी जै मानु ॥ केहि कै सव जो आपु मैं सदा
वटैं सन मानु ॥३०॥ प्रीति विनाभो सोइन हि मौं वि
नु होइन प्रीति ॥ प्रीति रहै जेहं भौं रहै यहै मानकी
रीति ॥३१॥ गर्व विसन धन आगते निष्टर वचन प्र वा
स ॥ लाल चुवि प्रिय करनि त्रिय प्रिय ते होइ उदासु
॥३२॥ मान विरह यह लेवि विधि जहां विविधि बुधि
वास ॥ केसव करुना कहि कै छ कहियतु विरह प्र ॥४१॥
वास ॥३३॥ इतिश्री मन्महाराजकुमार श्री इंद्रजी
तविरचितायां रसिकप्रियायां राधिका के स कै
मानमोचनु वर्नने रसमप्रभाव : ॥१०॥ सोरठा ॥

83 घटिजातकेसवजहांसुषकेसवेउपाइ॥उप
जेतुकेरुनारसुतहांआपुनतेअकुलाइ॥१॥सुष
मेंदुषक्योंबरनियेंएवरननक्योहार॥तदपिप्र
संगहिपाइकछुवरनतुमतिअनुसार॥२॥रा
धिकाकोप्रछंनकरुनविरहयथा॥मैंपठईमति
लैंनसषासुरहामिलिकोमिलिवेकेउआंनें॥जा
इमिलेछिनहाछिगहूतीस्यालसोंदेहदसान
वषानैं॥प्रीतुपैजकियेंतनुप्रांननिजोगकेओ
रुप्रयोगनिधानें॥लोजपैवोलनपांऊंनकेसव
ऐसेंहाकोउकहादुषुजानें॥३॥राधिकाकोंकरु प्रछंन
नाविरहुयथा॥हरितहरितहारहेरतहियोहर
तुहारहिंहरिननैंनीहरिनकहूलहैं॥वनमाली
व्रजपरवरसतवनमालीवनमालीहरिदुषकेस
वकेसैंसहैं॥हृदयकमलनैंनदेषिकेंकमल
नैंनहोउंगीकमलनैंनओरुहोंकहाकहों॥आप
घनघनैंस्यामघनहांसेहोतघनस्यामतिकेंघो
सघनस्यामविनुक्योंरहों॥४॥केसकोप्रछंनवि करुना
रहुयथा॥जैसेंमिल्योप्रथमअवनमगजाइअनु
रवनभवनकियेअलिकअलकमें॥मनुमिलें
मिलेनैंननकेसोहासससविलासछविआसभूलि
रहेकपोलफलकमें॥नैंनमिलेंमिल्योप्रानु
सकेलसयानुसजितजिअभिमानुभल्योतनकी

र०प्रि० 84 झलकमें॥ तैसेंछलवलसाधिराधिकें मिलनक
रुचाहतक्रियोपयानुप्रानऊंपलकमें॥ ५॥ करुण
॥ ४२ ॥ कौप्रकासविरहकुपथा॥ हेतरुनाईतरंगिनि
धरसपरसप्रखरागरंगेपय॥ केसवदासजहं
अमनोरथसंभ्रमविभ्रमभलिभरेभय॥ तर्कै
तरंगतरंगिततुंगतिमिंगिलसलविसालनि
केचय॥ कान्हकेधूकरुनामयहेसखीतेंहीकि
येकरुनाधकनालय॥ ६॥ अथप्रवासलछनदोहा॥
केसवकौनहूंकाजतेंपीउपरदेसहिजाइ॥ ता
सोंकहतप्रवाससवकविकेसवसमुझाइ॥ ७॥
राधिकाकोप्रछंनप्रवासयथा॥ तंकरिहैमदि
धौंकवगौनहिनंदकुमारतोगोनुकियोई॥ मोहि
महाडरुतऊउरकोनुरहैलटिलेंजितिकैधौं
लीयोई॥ औसीनवकृपिपैंकेसवतोहिविचारयो
भुवसवछिवाकविपोई॥ तेरेंहीजीयजियेंजि
तिकौजीयरेजियताविनुतवजियोई॥ ८॥ रा
धिकाकोप्रकासप्रवासयथा॥ कौनकेनप्रीतिकों
नप्रीतमहिविछुरतियाहीकेंअनोखोपतिवृत
गाइयतुहैं॥ केसोदासजतनुकरैंहीमलेंआवें ॥ ४२ ॥
हाथआंकेहापछितिकेपीछेंधाइयतुहैं॥ उ
छिवलोजौनमानैंकोहकीवलाइजानैमानसे
जुपहिचानैताकेंआइयतुहैं॥ याकेंतोआजुहीं

85 खिलौं किमरिआउ कहूं आगि लागै मेरी आली
मऊ पाइयतु है ॥ ९ ॥ राधिका कौ भयभ्रमु यथा
कोकिल केकी कुलाहल हूलि उठी उर में मति
की गति लली ॥ केसव सीत सुगंध समीर गयो
उड़ि धीरजु ज्यौं तनु तूली ॥ जै मुनि जे मुनि कै व
धी जो नह्यौ जामिनि पैं न अजौं सुधि भूली ॥ क्यौं
जीयौं कैसी करौं विसुसी वडु ह्यौं विसिनी विस
वासिनि फूली ॥ १० ॥ कृस्न को प्रछंन प्रवास विरहु ॥
यथा ॥ जिनि बोल सु बोल अमोल सबै अंग केलि
कलोलनि मोल लिये ॥ जिनि कौं चितु लाल ची
लोचन रूप अनूप पियूष सुपी कें जिये ॥ जिनि
के पद केसव पानि छिये सु प्रमानि सबै दुख दूरि
किये ॥ तिन्हि कौं संग छूटत हां फटु रे फटि कोटि
क टूक भयो न हियें ॥ ११ ॥ कृस्न को प्रकास प्रवास
विरहु यथा ॥ केसव क्यो हूं चलें चलि कोरि सदेसे
कहे पुनि पैंड कहू पर ॥ आगें धरे अपनो सो कै
साहसु पाछें हाथ ले लि परै पग भूपर ॥ होत जहीं
तहीं नट टेंगो से चलो न कछो परै काहू हितू पर ॥
लोक की लाज पियो न परै पै मिलो नु करें रस को
सक ऊपर ॥ १२ ॥ कृस्न को विरहु अमु यथा ॥ प्रे
त की नारि ज्यौं तारे अनेक चढाइ चलें चितवें
चहूं घां तो ॥ कोटि निसाकर कुरें कर कें जननि केसव

र. प्रि. 86 सेतसबैतनुतातौ॥ भेटतिहैंवरही अवहीतोव
स्याइगईहैंसुखैसुखसातौं॥ कैसीकरौंकिहि
॥४३॥ केसैंवचौंवकुसौंतिसिआईकियेंमुकुरातौ॥१३ ॥
राधिकाकीनिद्रायथा॥ आएतेआवैगीआंखि
निआगेंहीडोलतिमानऊमोललईहैं॥ सोऊन
सोवनदैंउनज्योंतवसोवनमेंउनसाथुदईहैं॥
मेरीपैभलिकेहाकहौंकेसवसोतिकहूतेसहेली
भईहैं॥ स्वारथहीहितुहैंसवकैंपरदेसगयेंहरि
नासैंगईहैं॥१४॥ कृस्नकीनिद्रायथा॥ केसव
केसेंहूकोहिउपाइनिआंनिसुतोउरलागतिहैं॥
चकचौंधतिसीचितवैचितमेचितसोवतहूम
हिजागतिहैं॥ परदेसप्रियापलुमोहिपत्याति
नजानैंकोयाकीकेहागतिहैं॥ तजिवेंननिनीदन
वोढवधलकुआधिकरातितेभागतिहैं॥१५॥
राधिकाकीसषीकीपत्रीकृस्नकौंयथा॥ केसव
कुवरवृषभांनकीकुवरिवनदेवताज्योंवनउप
वनविहरतिहैं॥ कमलाज्योंथिरनरहतिकहूं
एकठौरकमलानुगाज्योंकमलनितेजरतिहैं॥
कालीज्योंनकेतुकीकेफूलन्हचैंसीताजज्योंनि ॥४३॥
सिचरमुखचंददेखैंहीडरतिहैं॥ वदनउधारत
जो हीमदनसुयोधनहिद्रोपदीज्योंनामुतेरोईरर
तिहैं॥१६॥ यथा॥ भोरनीज्योंभवतिभवनव

87 नयी धिकानि हंसिनी जों मृदुल मृनालिका वह
ति हैं। धाइ उपाउ रटति रहति चित चात की जों चंदु
चितै चकई जों चुपु है रहति हैं। हरिनी ज्यों हेरति
न केसरि के काननहि केकी सुनि ब्याली ज्यों बिला
न ही कहति हैं। केसव कुंवर कान्ह बिरह तिहारें
ऐसी सुरतिन राधिका की मूरति गहति हैं। ७॥
कृस्न के सषा की पत्नी राधिका कहि यथा। दीरघ
दरीनि बसै केसोदास केसरी ज्यों केसरि कौं देषें
बनकरी ज्यों कंपत हैं। बासर की संपति उलूक ज्यों न
चितवत चकवा ज्यों चंदु चितै चौगुनौ चंपत हैं। के
का सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम घननि
की घोर जैसें जवासे जों तपत हैं। भौंर ज्यों भवत ब
न जोगी ज्यों जगत रैंनि साकत ज्यों [illegible] स्याम
नामु तेरोई जपत हैं। ८। दोहा। केसव दास प्रवा
स को कह्यौ यथा मति साज। राधा हरि बाधा हरन
बरनों सषी समाज। ९। इति श्रीमन्महाराज कु
मार श्री इंद्रजीत बिरचितायां रसिकप्रियायां प्रवा
स बिरह बर्ननं नाम एकादस प्रभावः। ११॥ अथ स
षीजन बर्ननं। दोहा। धाइ जनी नाइनि नटी प्रगट
परोसिनि नारि। मालिनि बरइनि सिल्पिनी चु
रहेरिनी सुनारि। १। रामजनी संन्यासिनी पटु पट
वा की बाल। केसव नाइक नाइका सषी करहि
समय काल। २। धाइ को बचनु राधिका सों यथा

र॰ प्रि॰ 88 मोहनसाथकहानिसिधौसरहैंमतरंजाहिकेमि
सबैठी॥केसवकोंहूसुनैंमहतारीतौराबिहैं
॥४४॥ रीघरहीमहिपैंठी॥हौंसिषऊंसुषुरैसिषतोहि
तैंभौंहरवटइकैंडीठिअमैंठी॥कोंनलडैतीसुह
पनकोचैंतुहीकेघूजातिअभासहिऐंठी॥३॥
हसकौवचनुधाइकों॥थोरीसीसुदेसबैसदीरघ
नयनकेसगोरिजसीगोरीभोरीभवजकीसारीसी॥
सांचेकीसीढरीअतिसहसमसुढारीकटिकेसो
दासअंगअंगभाइकेंउतारीसी॥सौंधेकीसीसौं
धीदेहसुधासौंसुधारीपाउधारीदेवलोकतेंकि
सिंधुतेउधारीसी॥आजुपासौंहरिविजेलिवोलि
चोलिलेकुलालकोलिअैसीग्वालिल्याऊंका
मकीकुमारीसी॥४॥जनीकोवचनुराधिकासौं॥
सोभाकोसघनवनुमेरेघनस्यामुलितनईन
ईहरिचितनहरतहिराईये॥केसोदासससकेल
सुवासकोनिवासुतनविविधविलासहासरा
सविसराईये॥ऊषरसकेतकमहूषरसुमीठे
हैपियूषहूकीपैलीघाहैजाकीलियराईये॥
चोरीचोरीनैननिचराअैसुज[illegible]कौंनुजोलौं ॥४५॥
पीयमनमाहमनुमेलिनचराईये॥५॥जनीको
वचनुहसनसौंयथा॥अैसोवातैंअैसेंहीधौं
केसेंहैकेहापरतिजाकीमतिगतिलाजपाट

89 सौंलपटी हैं ॥ मेरैं हानि आवैं मेरी वार तातीवरवे
तौ जानत हौं थारहू के साथ लो टिलेटी हैं ॥ ऐ
सी तो हैं वैरिनि की चेरी वाकी के सोराइ जैसी
गुमहत्ता करि पांइ परि भेटी हैं ॥ जानि ति हैं
नंदजू के बेटा हौं जू जानौ बोलि वेऊ तौ उत हि
वृषभानजू की वेटी हैं ॥ ६ ॥ नाइकनि को वचनु रा
धिका सौं यथा ॥ अब ही तो गात पुनि को रिहू
लौं न पै [illegible] बोलन जाहि री पीछैं ही लागैं ॥ कहि है
तब कैसी परा ग जौ टोटहि हू है कछू निसि घोस
के आगें ॥ जौ न रहो परैं के सब के मैं हू देखत ही सु
घु स्याम सभागैं ॥ तो देतिहे जौं न क्यों राखति का हेन
आरसी पैं करि आंखि निआगें ॥ ७ ॥ नाइकन को वच
नु रूप सौं ॥ वडी जिय लाज वडौ डर आली वडी
लकुरी यौं चलैं चितुली नैं ॥ वडी वडी आंखि वडी छ
वि मैं चितवै वडी वरवडो सु पुरदनैं ॥ वडे ही कि वार
वडी हमखि के सब सौं हू मिलौ तौ मिलौ हम हानैं ॥
वडे निहूं सों तो वडे कुछ बोलैं इतै वडे मान वडो मनु
कीनैं ॥ ८ ॥ नटी को वचनु राधिका सौं यथा ॥ जो हैं
दिखावन तो हि गई राते मेरी मैं ग्रीव गही फिरि
माई ॥ आजु कहा दिख साध लगी है दिखैं ऊगी
जाइ तौ वेई के न्हाई ॥ देखते सी री हू जाति भइ

र०प्रि० ९० अनरसेबैं जरैं सुपहै अधिकाई। रातिकी वेगति
द्यौसकी एअब हौं तेरी बात निबाज हि आई।९ ॥
॥४५॥ नटीकौ वचनु रूपसौं। जहीं जहीं तुरैं तरही जौं
न्है आसी जगमगै कैसैं हू जो केसव दुराउ लियैं
रंगकी। पवनकै पंथ अली अलिनीकै पीछैं आ
ली अलिनी जौं लागी फिरै जिन्है साथ संगकी॥
निपट अमिल वस्तु न्है मिलिवेकौ जैसैं कै
मिलौं ऊं गति मोपैन विसंगकी। हूकतो हुसहतु
बरसति ऊतो हू जैं वासविसे विसुबासु भई वाकैं अं
गअंगकी।१०। परोसिनिकौ वचनु राधिकासौं।
पाहूपरैं पलिकापरस्यौ सुलगी रतितौ लन मेलि
रती हौं। सौं सकियै मुकु सौं हौं कियौ अबलौं तुम
पेगतिअैसानती हौं। केसव कैसें हू देषनकौं जि
न्है भोरहीं भोराहु आंनिरती हौं। पानपवाव
तिही तिनिसौं तुम रातिकरूसतराति रती हौं।११ ॥
परोसनिकौ वचनु रूपसौं। हांसीमैं बातक वा
सौं कही हसि वैंहू कह्यो सुहितै करिलेख्यो। औ
चिमिली न मिली सषी आमिलिवो ईसु केसव
क्यौं अवरेख्यो। चिवाहु मरैं चुपुसाधैं किवाकैं ॥४५॥
स्वाती समैं हूअवैं सु विसेख्यो। आजु हौं वह
आवति घां जिहिं आगि लगैं हूनअैगानु देख्यो।१२॥

मालिनिकौंवचनुराधिकासौं॥ दुरिहैंक्योंभषन
वसनदुतिजोवनऔरदेहकीजोतिहोतिघोसुऐ
सीरातिहैं। नासकोसुवासुलागेंहूहैफैसीकेस
वसुभावदेहकीवासभौंरभीरफारेंषातिहैं।दषि
तेरीसुरतिकीभरतिविसरतिहैंलालनकेदृग
देषिवेकौंललिचातिहैं॥ चलिहैक्योंचंदमुषीकु
चनिकेभारभऐंकेचनिकेभारतोलचकिकटि
जातिहैं॥ ३॥ मालिनिकोवचनुकृस्नसौं॥ घेरौंजि
निमोहिघरजानदेऊघनस्यामघरीकलागीउर
देषियौज्यौं दामिनी॥ हेहूकोऊऐसीवैसीआ
वैइतउतहूसुवद्रषभानजकीवेटीगजगामिनी॥
आदितकीआयौअंतुआऊवनिवलिजौंउआव
तिहैंवैऊवनिआईअरुजौंमिसी॥ कामकेडरनि
तुमकुंजगह्योकेसोरहु भौंरनिकेभयभौंजुगह्यो
उहिभांमिनी॥ ४॥ वरहनिकौवचनुराधिकासौं॥
मैंनऐसोमनुमहुमहुलमनालिकाकेसतकेसे
सुरधुनिमननिस्रतिहैं॥ दासोंकेसवीजदांत
पातसेंअरुनओठकेसोदासदेषिदृगआनंद
भरतिहैं॥ प्यारीमेरीतेरीमोहिभावतिभलाईला
लेवरुतिहैंतोहिओरवरु[illegible]तडरतिहैं॥ मांषन
सीओभमुषकंजसेकौंवरेकाहिकाठसीकठोवातें

र॰ प्रि॰ 92 कैसैंनिकसतिहैं॥१५॥बरूनिकोवचनुहंससौं
नैंननिनवावोनैंकुअतिहीअनीतिकरैंआनत
॥४६॥ नतुमजेसैंधुजजानियतहैं॥ चंचलचखिचित
चटकचटकिलौंवैचरकेचितनिअभिसारसौं
चियतहैं॥ एकतिकेपैठैंउरउरसिउरोजनिमैं
उरझेतेकेसोराइकेसैंतजियतहैं॥ असाकहूं
होतिहैंजवालनिकेचोरिचोरिचितमनमथची
कहाथवेचियतहैं॥१६॥ सखिनीकोवचनुराधि
कासौं॥ अवहीतोबोलिरीबोलिलगाजिकपौरि
हलौंउझिआननदीनें॥ मेरैंजानभईउलटीनु
महीवसकेसवहैंकहिवेकरूकीनें॥ जोपैइतो
दुखुपावतिहौंतलपैदृगमानमनौंजलझीनें॥
तोकतघाडतिहीछिनाएकरहोकितिचितजौं
हाथहिलीनें॥१७॥ सखिनीकोवचनहंससौं॥
बाहतुरीनिमिषघुरघोगहिलैरकुठौरनिआनि
नजाहू॥ लोजनआवतिमारैंसभाजनलागेअलो
ककेताजनेंताहू॥ कोरिविचारविचारकैसवदे
वहूवकिहितसवकाहू॥ नेहवहीफिरिलागहू
संगननेंननिकोसंगुओरनिवाहू॥१८॥ चुरहरि ॥४६
नीकोवचनुराधिकासौं॥ मनमनमिलेंकहामि
लिहैंमिलेकोसुखुमिलिहूधौंदेखहुबुलाइकाहू

९३ वालसौं। झूलिपरें औंहलनिहीं बांधिहैं कितें कहि
न बांधेवलिजौं उवनमाली वनमालसौं। मुकु
मोरें मोरें न मरति रिसके सो दासभार ह्वै धौं मेरे
कहें कमलसनालसौं। नैंननि हौं विहसि विहसि
कोलौं बोलिहौं हौं केव ह्वै तौं बोलियें विहसि मुह
लालसौं। १९। चुरहरिनिको वचनु हंससौं यथा॥
आपुनु ह्वैजैं दुषी दुषु जाकें होताहि कहाकवहू दु
षदीजें। गोविनु औरु मुहाइनके सवताहि सुह
इसु तो सवकी जैं। भगवउ जू रखी तुमसौं तो वि
रवाइ कहो कहा लीजैं। जो रिस आइतौ जै जे मना
वनतातौ है ह्वै धु सिराइन पजैं। २०। सुनारिनि
को वचनु राधिकासौं यथा। लोल अमोल कटाछ
कलोल अलोलिकसौं पट ओलिक फेरे। पांलिप
सौं अति पैंनैर साल विसाल वनें मन भांवते मेरे।
केसव चाकनै चोगुने चौ छवि तैं कै भए हरि मा
इनि चेरे। सो चसको चन आरति रोचन धा[illegible]मे
चन [illegible] लोचन तेरे। २१। सुनारिनि को वचनु
कृष्णसौं। हांसी में ह्वैते हरि हरें कें कुच तिम
जु हरिकें हंसति हेरि हियैं अनुरागी हैं। प्रेमकी
पहरी गए जानति जनावताहैं आजु अधराति
कलौं मेरें साथ आगी हैं। अवलौं जौ धरी धीर

र.प्रि. ९५ तैसैंद्दिनद्वैकेओर धरौगिरधरतुमतेकोवउभा
गीहैं॥भांवतीतिहारीवहकालिहहतेकेसोराइ
॥७॥ कामकीकथानिकधूकोंनदैनलागीहैं॥२२॥सं
भजनीकोवचनुराधिकासौं॥कोमलअचलवे
तोअभलाएतिछचलमलिननलिननवभीतके
सपातहैं॥सथेसाधुसुद्धवेतोकुटिलकरमाते
केसववपरमचोरमरमकिरातहैं॥पाएहैंपकरि
तवजाइहेंनकेसैंहूतथोरेअठलातिएतौअ
तिअठलातहैं॥वरजतिक्योंनतहांकेसवकीकह
तिमेरमोहनकेमनैंतेरेनैंनघेंछेजातहैं॥२३॥
राधजनीकोवचनुहसससौं॥कोंनहूतोषुकहा
भयौकेसवकोंमिति कोटिकसौंहितुठाटैं।र
चनसाधसधेंसुषकीविनुराधेकोआधोकुलो
चनुउठाटैं॥क्यौंषरिसीतलवासुकरैंसुषजोरभ
बीघनसारकेसाटैं॥लोलुचुहाथरहेंवृजना
यचेप्यासबुझातिनओसकेचाटैं॥२४॥संभ्या
सिनिकोवचनुराधिकासौं॥नघूटिहैंघुउअैं
जवकरिहौंधौंकैसीतवकेसोराससआनयास ॥४७॥
भरुअप्यासभागिहैं॥बेलुभलिजोइगोसुहाइगो
नचित्तचेतिकधूनसुहाइगोरारैंनिदिनुजागिहैं॥
ताततेतपतिहूनीसारेतेससहसगुनीउपजिपरैं

95 गी उर ऐसी एक आगि है ॥ ऐं उसौं ऐं आहि जिनि
अंचलु उआतु ओलि ओउ तिहें काहू की गुडी हि
उड़ि लागि है ॥ २५ ॥ संध्या सिनि को वचनु हरि सौं
सीतल हूं है तेल तिहारें नव समति वहतु मन तज
ततिलु ता कौं उरताप गेहू ॥ आपनौं ज्यो हरिलासो
परस ऐं हाथ व्रजनाथ रहै कैं तो अकाथ साथ में
नु ऐसो मनु लेहु ॥ एते पर के सो राहि तुम्हें नप्र
ज्ञा हि वाहि विरहै जक लागी भागी भष सुष भल्यो
रहु ॥ माडौं मुहु छाडौं छिनु छल निछवि लेलाल
ऐसी गवारिनि सौं तुम हौ निवाहो नेहु ॥ २६ ॥
पटहरनि को वचनु राधिका सौं ॥ या हरी कौं मेरी गुसां
इनि मैं पहिलें मिलई वतीया छल छेलौं ॥ वातें
मिलें अंछि आ मिलई सछि आनि भौं आंछिनि पा
रिकें ऐलौं ॥ आंछि मिलें मनु लागि रहै मनु लेहु
मिलवा गहें हम गेलौं ॥ मिलें मनु माई कहा करि है
मुहु हाके मिलें तो कियो मनु मैलौं ॥ २७ ॥ पटहरनि
को वचनु हरि सौं ॥ वा मृगनैंनी ज्यौं ओरनि ही जु
लगावत हैं मुष ऐसे न हूजें ॥ सौं नोई सी सुनपी
तरि है हुतो के सव के सें हू हाथ न घूजें ॥ आप
गिरागुन जौं सिषवें तऊ काकुन को किल ज्यौं कल
कूजें ॥ सुंदर स्याम विराम करो कछु आंव की साध

र. प्रि. 96

॥४८॥

न आविलीपूजें ॥ २८ ॥ दोहा ॥ वचन नयन
सुषमयनकर कहे सचिनिके मर्म ॥ केसव
कहे केंघ्रक अवतिनिके को विरहके मे ॥ २९ ॥
इतिश्री महाराजकुमार श्रीइंद्रजीतवि
रचितायां रसिकप्रियायां सषीजनवर्ननं
दसमा प्रभावः ॥ १० ॥ अथ सषीजनवर्ननं दोहा ॥
सिक्षा विनय मनाइवो मिलिवे कर हसिंगा
र ॥ अरु कि अरु देहि उराहनो यस्तिनिको
व्योहार ॥ १ ॥ राधिकाको सिक्षा ॥ नेकुलगे
मुह सोतिर हैं हिनलाहे लगें सुष देहर
हैंगो ॥ नाह आवे सुष देति हैं केसव नाऊ
सदा सुष देतु रहे गो ॥ नाह तें नाहरी ना
हि भलाई भली सव नाऊ हितें पैकहै गो ॥
नाह सों नेकु निवाहि वलाइ ज्यों नाहसों
नेकु कहा निवहैगो ॥ २ ॥ रूपको सिक्षा
यथा ॥ कुंकुम उवटि कुंकुमा के न्हवाइ ज
ल सोंधो सिर लाइ या हि लाला के हा रास में ॥
वंदनु चढाइ फूल फूलपहिराइ भलिवेस ॥ ४८
काज आंजि माजि कीनी है प्रकास में ॥ केस
व कपूरपरिका हे कों षवावो पान जोपे मनु

97 मागन हैं औसे दी विलासमैं । तो व्राहीनमना
औंह रिहाहा करिपाइपति सबदई सुवासवसै
जाके मुखवासमैं ॥ ३ ॥ राधिकाको विनय ॥ औ
सैं ही क्यौं षुपु हू रहि हौं सषी हौं सहि हौं सत
रासट सौं लौं ॥ क्यौं सति हैं मिलिवे विनु तोहि
तऊ मिलि हैं मिलियै हिन जौलौं ॥ के सबकौ
सिकरौं उपचार मिलैको कहा मिलि हैं सुषु तौ
लौं ॥ देषि धौं अंगनि आरसा लै मिलि हौं विय
सौं मन हीं मन कौ लौं ॥ ४ ॥ कृस्नको विनय ॥
मुखके से फूलनै नैन सा लौं से [illegible] रसन औं न लाल
केअधर हास सुधा सौं सुधा स्यो है ॥ वेनी पिक वें
नी का लिवें नी सावनाई बारबार कुवाकसो क
रहा कौ करि राख्यौ हैं ॥ भीनै कुच कमल कल
पतरु के से फूल के सो रीस पाते विधि मुगध वि
चास्यो हैं ॥ देषै न गुपाल सषी मेरी को सरीकस
व सो नो सौं सवारि मनु मैं न सौं सवास्यो हैं ॥ ५ ॥
राधिकाको मनाइवो । रीझि रिझाइ रूरो छनिका
कि रहा मुख देखि बिहिवाइ सुभौं ही । बोलन आई
अबोली भई अबके सब औसी हमें न सुहौं ही ॥
मैं वकतें वह राई हैं तो सारी तें वह रावति मो
हि कपौं ही । औसी ही सपान सदा चलि हौ हरि सौं

र. प्रि. 98

हसिहौं कहिमो हांसों नाँ हीं॥ह॥ कस्नकोमना
इवो॥ भूषनमेरवनाइकैंकेसवफूलवनाइ
॥ ४९॥ वनाइकैं वागे॥ भागुवढाइसुहागुवढाइकैंरागुव
ढाइहियैं अनुरागे॥ पाँइनिलागतसोंधेत्वढाव
तपानअवतहांनिसिजागे॥ कान्हचलोउठि
वैठेकहांमनुमसिपरायोवरूसनलागे॥७॥रा
धिकाकोमिलिवो॥ जौहौंगनोंऔगुननितौं
तगनेंगुनगानजौहौंगनौंगुनतोंतऔगुनके
गनमैं॥ केसौदासऐसें प्रीतिछिपावतिछल
निमेंजैसेंघनछविघूटिघूटिछिपैंघनमैं॥
भारीभयकारीनिसिभारोंकीअंघावनीअति
कैसैंवसैंघरजाकोपीउवस्योवनमें॥ वैठेतें उ
ठवैउठिचलेतेमचलिरहेंमोईक्योंनकहैम
हूजोईतेरेमनमें॥८॥ कृस्नकोमिलिवोयथा ॥
निछेहरीसखीउरपाइहरीका दैखिनीसखिमि
नीहिथाइहरीहसिअधरातको॥ झुकिझुकि
हारीरतिमारिमारिहारयोमारहारीझकझोर ॥ ४९
निछिविधिगतिवातकी॥ दईनिरदईदईवाहि
काहेऐसीमतिजारतिजुरैनेऔनसाकुऔसे
गातकी॥ कैसेंहूनमानैहोंमनाइहारीकेसोरा
इवोलिहारीकोकिलावुलाइहारीवातकी॥९॥

राधिकाकौ सिंगारु। दीनौं मैं पाइ निर्माइ मह
वरु न्यौं जिमैं अंगनतु ज्यौं बिसुहाई॥ भूषनभाबि
तकीनें मैं केसव माल मनोहर मैं पहिराई। सर्वे
नु लैन्यवरी पति देबि सबी सब अंग सिंगार बि
धाँई। बंक बिलोकनि अंक लै पान बवावैं को का
न्हकुमार की नाँई॥१०॥ कृस्नकौ सिंगारु यथा॥
पागु बनी अरु बागौ बन्यौ बटु वा पटुका कटि ताक
टिनीको। सौंधौ बन्यौ अति बाहु मनोहर हारु
बन्यौ उर भाँवतो जी को॥ धातु बन्यौ मुख लोल
ललात ऊमो हि सिंगारु लग्यो सब फी को। भाल
भली बिधि जो लै गुपाल कियो उहि बाल बना
इन टीको॥११॥ राधिकाको मुकिवो। फिरि फिरि
फूरि फिरि फेरयो मैं हरि को मनु मनु फेरें फेरी पुनि
भागकी भली घरी। पलपल पाइनि परति कुती
जिनि कौं सुपरयो पाइ तेरै औ कृपा के पाइ हौं परी।
बड़ि निकी बॅटनि की बडाई पै बडाई मेटि के सोराइ
बड़ि निहु मैं तजु बड़ी केरी॥ हौं तो जानौ मनाऔं
ते मेरो गुनु मानि है मैं याही कौं मनाई तेंजु मोही कौं
मनाई री॥१२॥ कृस्नको मुकिवो॥ ताको वैसाई
करक करिकै सवको मलता तक हिं तुरई। विधि
की लिपि लोपी न जाइ न्यलो लिक लै मनि सीस

र. प्रि. 100
भुजंगा रई ॥ अपनौं मुख देखकुंआर साँलें पुनि
बात कहौं परिमान लई ॥ वृषभांन सुता पर
और सुहागिल वाउ जहाल निजी भगई ॥ १३ ॥
॥ ५०॥ साधिका कोउदाहनौं ॥ के सो दास कौं न वडी
रूपकुल कांनि पै अनौखो एक तेरै हीअनै
बुंडरओ लियें ॥ आपनैं समान काहू मान
सैनमानैं तगुमान के विमानवैठी व्योम व्यो
म ओलियें ॥ अंड सों अडाति अंचलु उडा
तु ऐसी छोडि अैंउ वैंडी चितवनि निरमो
लियें ॥ दीनो मनु हाथ जिहि हास सों हर
षि कैं ता हरि सौं हरिननैं निहारैं हूतो वो
लियें ॥ १४ ॥ पुनः यथा ॥ सों हतिकों लोचु
नसकोउ को हू बीच भी कोपो धरो
प्यारे पी के लौ के लोचन किनोरे को ॥ माघन
की चोरी को है थोरी थोरी मोहू सुधि जान
ति वहै किसोरी जोरी है जुवारे को ॥ मेरी यै
कुमति और कहा कहौं के सो राइ लाज लो
गति है लाल इहा पाउ धारे को ॥ ऐसी कैं
गुठाई तुम अव हीं फठाई वह छार ऊतो धू ॥ ५०
री नाहि पांइन के पारे को ॥ १५ ॥ दास को उ
दाहनौं ॥ आंधी सी धाइ है साईं दवारि सी

१०१ सखिनिकेदुखरहरहीहैं। तापकेतलतवोरि
निमालिननांइनिनोहकेनेहनहीहै। तेरीसौं
तेरीसौंमेरीसखीसुनितेरीअकेलीकीआस
रहीहै। कान्हमिलाउकिमोहिनपाइहैआप
नेंजीकीमैंतोसौंकहीहै।।१६।। दोहा।। इहिं
विधिस्यामसिंगाररसुवरनुविधिवरनुलोइ।।
चारिवरणनेंहआश्रमहिकेहतसुनतसुषहो
इ।।७।। इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजी
तविरचितायांरसिकप्रियायांसषीजनक
र्मकथनंनामत्रयोदसप्रभाव:।।१३।। अथहासल
छन दोहा। नयनवयनकछुकरतजवमन
कौंमोहुउदोतु। चतुरचित्तपहिंचानिजोंतहं
हासुरसहोतु।।१।। अथहास्यरसभेद। मंदहा
सुकलहासपुनिकहिकेसवअतिहास। को
विदकविवरनउसवैअरुचोथोपरिहास।।२।।
मंदहासलछन। विकसहिनयननकपोलकछु
दसनदसनकेवास। मंदहासतासौंकहतकोवि
दकेसवदास।।३।। राधिकाकोमंदहासु। जोनें
कोपानछभावतकयौंहूगईलागिअंगुलिको
दनवीनें। तैंचितयोलवहींतिहिमांतिगुलोल
कलोचनलीलिसेलीनें। वातकहीहसकें

र॰ प्रि॰ 102 हसिकैं सुनिमैं समुझी व्यवहार सभीनैं ।। आ
नति हैं पिय के जिय के अभिलाष सबै परस
रस कीनैं ।। ४८ ।। कैसक कोमल हास यथा ।। रसन बस
।५१।। न मन हिरसैं रसन द्युति बरसि मंद नसर करत अ
वत हैं । फांई झलक तिलोल लोचननि कपोलनि
मैं मोल लेत मन कौं मध बचन समेत हैं ।। भौं हैं कहैं
रति भाव कहैं मेरी भांवती के भांवते छबीले ला
ल मौंन कौंन हेत हैं ।। कैसो हास प्रकास हास
हसि कहा लेऊं गेंज अैसी हा हैंस निती हियें नि
हरें लेत हैं ।। ५ ।। कल हास लछन दोहा ।। जहं
सुनियें कल धुनि कछू कोमल विमल बिलास ।
कैसव तन मन मोहियें वरन उंक विकल हास ।। ६ ।।
राधिका को कल हास यथा ।। काछें सितासित का
छनी केसव पातुर जौं पुतरी नि बिचारौं ।। बाजतु
है मृदु हास मृदंग सुदीपति दीपनि कौ उजियारौं ।।
कोटिक राछन वैगति भेद सौं नचावतु नाइकु
नेह लिनारों ।। देषत हैं हरि देषितु मेंह्य हहोतु
नुअऔं छिनि हां मैं भ्रमबारौं ।। ७ ।। कस्यकौ कल ह
स यथा ।। आजु सबी हरि तो सौं कछू बडी बार ।।५१।।
लौं वातकै रिसभीनी ।। मैलि गरैं पटुका पुनि
कैसव हारि हियें मनु हारि सी कीनी ।। मोहि अवै

103 सोमहासुहहाकहिवौंएकहावकुवारनिलीनी ॥
तैंसिरहाथकहाउननिकैंउहिगांठिकिहरूसिअं
चलदीनी ॥ ८ ॥ अथअतिहासलछन सोरठा ॥
जहांहंसहिनिरसंकहैप्रगटहिसुषमुषवास ॥
आधेआधेवचनपरउपजिपरतुअतिहास ॥ ९ ॥
राधिकाकोअतिहासुयथा ॥ तैसीयैजगतिजो
तिसीससीसफूलनिको तैसोईतिलकुचमकतु
तेरेभालको ॥ तैसीयैदसनदुतिदमकतिकेसोरा
यैसोईलसतुलोलकंठकंठमालको ॥ तैसोईचम तै
कचारुलोचनकपोलनिको तैसोईचमकनकमो
तस्वलचालको ॥ हरैंहरैंहंसतचतुरचपलनैं
निचितुचकचौंधेतेरेमदनगुपालको ॥ १० ॥
हसकोअतिहासुयथा ॥ गिरिगिरिडठिडठिरी
झिरीझिलागेकंठवोचबोचमारेहो तिछविप्या
रीप्यारीसौं ॥ आपुसमैंअकुलाइआधेआधे
आषरनिआछीआछीबातेंकहैआछीएक
पारीसों ॥ सुनतसुहाईसबसमुझिपरैंनअबके
सोराइकीसौंदुरिरहेहैंमैंप्यारीसों ॥ तरनितन
जातीरतरवरतरठाढेतारीदैदैहंसतुकुंवरका
न्हप्यारीसों ॥ ११ ॥ अथपरिहासलछनं दोहा ॥
जहांपरिजनसबहसिउठैंतजिदंपतिकीकांनि ॥
केसवकौनहुबुद्धिबलसोपरिहासबषानि ॥ १२ ॥

र॰ प्रि॰ 104 धीराकः॥ यथा॥ आई है एक मास वन तें प्रिय गा
वति मानौं गिरिधर धारी॥ सुंदरता जनु काम की
कौं मिलिवो लिकै छोरी बृषभान दुलारी॥ गोपी कै
॥५२॥ लाइ गुपाल लै हिवे एकु नाइ मिली उठि सादर भारी॥
केसव भेटत ही भरि अंक उठी हसि कैं कहि गोप
कुमारी॥ ७३॥ इति रास॥ अथ करुनारस लक्षनं
दोहा॥ प्रिय के विप्रिय करन तें आनि करुन रस हो
त॥ ऐसो वरन वषानिये जैसो तरुन कपोत॥ ७४॥
राधिका को करुनारस यथा॥ तेज सहसे अपार
चंद्रमा से सु कुमार संभु से उदार उर धरियत
हैं॥ इंद्र से प्रभु परे राम जैसे रन सूरे कांम जैसे
रूप करे हाथ हैं हरियत हैं॥ सागर से धीरगन
पति से चतुरमति ऐसे अविवेक कैसे दिन
भरियत हैं॥ नंद मति मंद महाजस सो दास सौं कै
होंकहा ऐसे पति पाइ पसुपाल करियत हैं॥
॥ ७५॥ हंस को करुनारस यथा॥ चंपे कीसी
कली भली केसव सुवास भरी रूप की सी मंज
री मधुप मन भाई ये॥ देव की सी वानी अति वा
नी ते सयानी देवराज की सी रानी जानी जग सु
बदाई ये॥ काम की कला सी चपला सी चपला ॥५२॥
सी काम अबला सी कमला सी देह धरें पर ये
रूप पाइये॥ कोने कीने निपट कुजाति ग्वाल

105 ऐसी राधिका कुंवरि पहिंगोर सुविचाईयें ॥
॥ ६६ ॥ अथ रौद्र रस लछन दोहा ॥ होइ रुद्र रस
कोध मय विय रुद्र्य सरीर ॥ अरुन वरन वर
नत सवै कहिकै सब मति धीर ॥ ७ ॥ राधिका को
रुद्र रसु यथा ॥ कसरा को हाकु करि कै रिसगामी
मसुक पिक कंज पंरीट वनुली नो है ॥ मदुलम् ज
नाल विवि चंपक मराल वेल कुंकुम दाडिम के
ऊहूनों ढुमु दीनो है ॥ आरतु कनकतनु तनके
तनक ससि वटतु घट तुवंधु जावि गंध हीनो है ॥
कैसो रास रास भयो को विद कुवर कों रु राधि
का कुंवरि कोप कों न परखी नो है ॥ ६७ ॥ करुन
कौ रौद्र रसु यथा ॥ मीडि मारयो कलेऊ वियोग
मारयो वोरिकै मरोरि मारयो अभिमानु भारो भ
भमारयो है ॥ सबको सुहागु अनुरागु लूटि ली
नौ दीनौ राधिका कुंवरि केऊ सब सुषसामो है ॥
कपट कै पटि डारयो निपट कै ओरनि सो मेटी
पहिचानि मन मै हू पहिचान्यो है ॥ गीत्यो रति
रनु मथ्यो मनमथहू को मनु कै सो राइ कौन
कहै रौस उर आन्यो है ॥ ६८ ॥ अथ वीर रस
लछन दोहा ॥ होइ वीर उत्साह मय गौर वरन
दुति अंग ॥ अति उदार गंभीर कहि कै सब पाइ प्र

र० प्रि०
106
॥५३॥

संग॥२०॥ राधिकाकोवीररसुयथा॥ गतिग
जराजसाजिदेहकी दंपतिवाजिसाँवरथभाव
पतिराजचलचालसौं॥ केसोदासमंदहास
असिकुचभटभिरेभेटभरेपूतिभटभालैंन
खजालसौं॥ लाजसाजिकुलकानिसोचपोच
भयभाजिभौंहैंधनुतानिबानलोचनविसाल
सौं॥ प्रेमकोकवचुकेसिसाहससहाइकु
लैजीतिरतिरनुआजुमदनगुपालसौं॥२१॥
कृस्नकोवीररसुयथा॥ अघज्यौंउदारिहैं
किवकजौंविदारिहैंजकंसुके[illegible]केसोरा
इकेसीजौंपछारिहौं॥ हरिहौंकि प्रानना
थपूतनाकेप्राननिजौंवनतेंक्रिवनमाली
कालीजौंनिकारिहौं॥ कारिहोविमदघनवा
हनज्यौंघनस्यामकोहूसौंनहारेहरिमाहि
सौंक्यौंहारिहौं॥ वेहीकामकामवरव्रजकी
कुमारिकानिमारतुहैंनंदकेकुमारयाहि
कवमारिहौं॥२२॥ अथभयानकरससोहा ॥५३॥
होतुभयानकुरसुसदाकेसवस्यामसरीर॥ जा
कोंदेखतसुनतहीउपजिपरातिभयभीर॥२३॥
राधिकाकोभयानकुरसयथा॥ भुवमंडलमंडित

कैं घन घोरि उठे रवि मंडल मंडि गटी ॥ घहरा
ति घटा घट वात कै संघट घोष घटे न घटी हू घ
टी ॥ रस हूं रिसि के सब स्यामिनि देखि लगी ब्रि
षकामिनि कंठ तटी ॥ जनु पंथ हि पाइ पुरंदर
के वन पावक की लपटें झपटी ॥ २४ ॥ रस को
भयानक रसु यथा ॥ रोस में रस के बोल विसतें
सरस होत जानें मो प्रबल पित्त राखें निनिचा
खी हैं ॥ कै सो रास सुखरी बिलाइ कभाए व तुम
आजुल कुंजी मैं जा की अभिलाखी हैं ॥
सुधे हूं सुधा रिवि कौं आगि विष बन मो हि स
धे हो मैं जा की बात मो सौं उनि भाखी हैं ॥ ऐ
से मैं हौं कैसें जाउं दुरि हू धौं देखौं जाइ काम
की कमानैं सी चढाइ भौं हैं राखी हैं ॥ २५ ॥ अ
थ वीभत्स रस लछन दोहा ॥ निंदा मय थावी भ
त्सर सु नील वरन वपु तासु ॥ केसव देखत सुन
त ही तन मन होत उदासु ॥ २६ ॥ राधिका को वी
भत्सर सु यथा ॥ माता ही को मास सुतो हि लागतु
है मीठो मुख पीय तापिता को लोहू नैं कुन अ
घाति है ॥ भै षपनि के कंठ निकौं काटि तन कस
कतु तैसौ हियो कैसो है जु कहत सिहाति है ॥

र॰ प्रि॰ 108

जवजव होति भेंट मेरी भटू तवतव ऐसी सोहैं
बातिन अघाति हैं ॥ प्रेतिनी पिसाचिनी निसाचर
॥ ५८॥ की जाई है तें केसोराइ की सों कहि तेरी कौंन जाति हैं ॥
॥ ३७॥ केसव को वीभत्स रस यथा ॥ टूटे टाट घुन घुने
धूम धूम से तिस नें कूगुर छगोडी सांप वीछीन
धिनात जू ॥ कंटक कलित त्रिन वलित विगंध
जल तिनकौ तलप तलतौ कौं ले लिवात जू ॥
कुलटा कुचील गात अंध तुम अधरात कहि
न सकत वात अति अकुलात जू ॥ छेंडा में छु
सें कि घर ई धन में धन स्याम परधरनी नि
पहि जात न धिनात जू ॥ ३८॥ अथ अद्भुत रस
लछन सोहा ॥ होइ अचंभौ देषि सुनि सो अद्भु
त रस जानि ॥ केसवदास विलास निधि पीत
वरन वपु वानि ॥ ३९॥ राधिका को अद्भुत रसु ॥
यथा ॥ केसोदास वाल वैस दीपति तरुनि तेरी
वांनी लघु वरनन वुधि परिमान की ॥ कोमल
कमल उर उरज कठोर आति अवला पै वल
वीर वंधन विधान की ॥ चंचल चितौं नि चित
अचल सुभाव साध सकल असाध भाव ॥ ५८॥
काम की कथानि की ॥ वेचति पूरत रघिले
ति तिन्हैं मोल लेति अद्भुत रस भरी वेटी वृष

मौंनकौ।३०। यथा॥ ब्रजकौ कुमारिका वेलीमें
सुकसारिका पढावैं कोककारिकानिके सवस
वैलिवाहि। गोरभोरी भोरभोरधोराधोरी
वैसफिरैं देवतासी होरी होरीआइचोरा चोरसैं
चाहि। त्रिगुनतेरी आंनि त्रिकुटी कमानतता
निकुटिलकटाछ वानयछ अखिरजुआहि॥
एतेमान छांडि हैं तेरे कौं अडीठमनु पाछिहें
दै मारती पैं चकतानकोऊ ताहि।३१॥ हासि
कौ अद्भुतरसु यथा। मौंछनके चौर मधु चौर
दधि दूध चोर देखौं न हा देषत हाचितु चोरें
लेत हैं॥ पुरुषपुरान अरु पुरनपुरान इन्हैं
पुरुषपुरानसु कहत कहि हेत हैं। केसौदा
स देखि देखि सुरनिकी सुंदरी वकरति क्रिया
हसवसुमति समेत हैं। देखैं गति गोपिका
कौ भक्ति जाति त्रिजुगति आतिनि कैसें कै
परमगति देत हैं।३२। अथ समरस लछन
सोरठा। सवतें होइ उदास मनु वसै एकै ठौ
र। ताही सौं समरस कहै केसव कवि सिरमौ
र।३३। राधिका को समरसु यथा। देषैं न
हास अरविंदनि सौं चितचंद की आनंद कंदनि काई॥

र॰ प्रि॰ 110 कौंननकामकथाकरैंकामनताकैंत्रियामकौसुं
दरताई। दाबिगईजवतेतुमकौंतवतेंकंधुरा
॥५५॥ हिनदेब्योसुहाई। छाडैगोदेहजुदेखेंबिना
अहोदेऊनकान्हकहूहैदिषाई॥३४॥ हास
कोसमरसुयथा। बातिकबातनदासोंऊं
दाबनमाषनहूंसहमेटीहूठाई। केसवऊ
बमहूबहूबतेआई हौंतोपाहिछाडि
५८ जिठाई॥ तोरनछदकोरसुरंचककाबिगए
करिकौंहूठिठाई। वादिनतेंउनिराबीउठ
हूसमेतसुधावसुधाकोमिठाई॥३५॥ यथा
दनुजमनुजजीवजलथलजनिकौंपसो
हरहतुजहकालसोंसमरहहैं। अनंतअज
रअजअमरौमरतपरिकेसवनिकसिजा
नैंसोईतौअमरहहैं। वेजतुश्रवनसुनिसमु
झिसवदकरिवेदनिकौंवारुनहिसिवकोउम
रहैं। भागडूरेभागौभैपाभागनिज्यौंभाग्यो
परैंभवकेभवनमांझभयकोभवरहहैं॥३६॥ ॥५५
दोहा॥ इहिविधिवरनकुवरनवऊनवरस
रसिकविचारि। वांधकुस्तिकवित्तकौकहि
केसवविधिविचारि॥३७॥ इतिश्रीमनमहारा

न कुमारश्री इंद्रजीतविरचितायांरसिक
प्रियायांनवरसवर्णनंचतुर्दसप्रभावः १४
अथवृत्तिवरननदोहा॥ प्रथमकैसिकी
भारतीअनिआरभटीभाति॥ कहिकेसव
सुभसात्वकीचतुरचतुरविधिजाति॥ १॥ अ
थकैसिकीलछन॥ कहियेकेसवदासजह
करुनाहाससिंगार॥ सरलवरनसुभभाव
जहसोकैसिकीविचार॥ २॥ यथा॥ मिलिवे
कौंयेकमिलीमिलीफिरैंहृतिकानिमिलिम
नमनहीविलासुविलसतिहैं॥ वोलिवेकौं
एकेवालवोलिसुनिवेकौंअरुवोलिवोलि
तारथव्रतनिवसतिहैं॥ देखिवेकौंएकफि
रैदेखतोसीहेराहेरीदेवतामनाइहिनद
नमनसतिहैं॥ कीजैकहाकरमकौहहि
रूपमेरीमाईएतौमेरेकान्हजूकेनौंवहीह
सतिहैं॥ ३॥ अथभारतीलछनदोहा॥ वर इत्ति
नीयैंजोमहिवीररसुरसमयअद्भुतहासु॥
कहिकेसवसुभअर्थजहंसोभारतीप्रकासु॥ ४॥
यथा॥ कौंनकिकेनकपटकवकैवमकतवाहु
धुजफुलभुलीफलकतिअतिसुपदाइ॥ केसव

र॰ प्रि॰ 112 छबीलौ छल्लु सीसफूल सारथी सौ केसरि
की आड अधर साधिकै रची बनाइ ॥ नीकी न
कबेसरि को मोती नीकी नाक केसो हैं एक ही
॥ ५६ ॥ विलोकनि गुपाल तौ गए विकाइ ॥ लोच
न विसाल भाल जटित जराइ लालु मानौं
चन्द्रमा नैननि कैं रथ मनमथ रोइ ॥ ५ ॥
अथ आरभटी वृत्ति लछन दोहा ॥ केस
व जामहि रुद्र रसु भय वीभत्स कु जानि ॥
आरभटी आरंभु यह पय पय पय जमकै
बखानि ॥ ६ ॥ यथा ॥ घोर घनै घन घोरत
मंजुल उज्जुल कज्जल की रुचि रसचैं ॥ फूले
फिरैं भसैन भपाइ कैं सांवन की पहिली
तिथि पंचैं ॥ चोह कुदात ठिताता रपै
उरपैं बनिता कहि केसव सांचैं ॥ जोंनि
मनौं ब्रजराज विना ब्रज ऊपर काल कुटं
बिनि नांचैं ॥ ७ ॥ अथ सात्विकी वृत्ति लछ
न दोहा ॥ अद्भुत रुद्र सिंगार रसु सम रसु ॥ ५६
बरनि समान ॥ सुनतही समुझत भाव भनि
सो सात्विकी सुजान ॥ ८ ॥ यथा ॥ केसो दास
लाभलोभ भांतिनि के अभिलाख वारि दै

113 रावावरीनवाकहियोहोरीसी॥ राधिकाहरि
कीप्रीतिसवतेअधिकेजांनिरतिरतिनाथ
हूकैंदेखौरतिथोरीसी॥ तिनिमहिमेतुनभ
वानीहूपैंपारयोजाइभारथमेभारथीकी
भारतीहैंभोरीसी॥ एकैंगतिएकैंमतिएकैं
प्रानएकैंमनुदेखिवेकोंदेहद्वैहैंनैंनति
कीजोरीसी॥ ९॥ दोहा॥ इहिविधिकेसव
दासकविनवरसवरनिकवित्तु॥ पांचभांति
अनरसमुमोताहिनदीजेचित्तु॥ १०॥
इतिश्रीमनमहाराजकुमारश्रीइंद्रजीत
विरचितायांरसिकप्रियायांचतुर्दसिवर्ण
नेंपंचरसप्रभाव:॥ १५॥ अथअनरसलछ
नंदोहा॥ प्रत्यनीकुरसुविरसुकेसवदुःसं
धानु॥ पात्रदुष्टकेवित्तकेंकरेंसुकुकवि
वखानु॥ १॥ अथप्रत्यनीकरसदोहा॥ जहां
सिंगारहिवीभत्सभयुवीरहिवरनैकोइ॥ से
इकेकरुनामिलतहीप्रत्यनीकरसुहोइ॥ २॥
यथा॥ हंसिबोलतहीजुहसेसवकेसव
लोजभगावतलोकुभगैं॥ बोलिबेलावतही
कहैमनभौनतेरंभमनमथजुजगैं॥ ते

र॰ प्रि॰
११५

जुकहै सुकृतौ मन मेरें हू गो लियहै नहि
यो ऊभय मे ॥ हरि त्यौं नैकुनडौछिप सार
तहीं अंगुरी निपसार तलौगुलमें ॥३॥
॥५७॥ अथनीरसलछन दोहा ॥ जहं दंपति
मुहहीं मिलैं सहारहैं हृदि रीति ॥ कप
ट हेल पटाइ मन नीरस रसकी प्रीति ॥४॥
यथा ॥ गाहत सिंधु सयानननि के जिन
कीमति कीअति देहद हेली ॥ मोहिह
सी दुषु देऊ दई तिननि हू सोंजन भावति
चैंम पहेली ॥ आंनी है आनि मिली मुह
हीं हिय नाहि यैं भावति गावैं गहेली ॥ आ
गुलौं कांननि हूं न सुनी सुतौ देषि चली
हमसौ तिसहेली ॥५॥ अथविरसरस
लछन दोहा ॥ जहां सोग महि भोग कोंवर
निक हैं कवि कोइ ॥ केसवदास कुलोंस सौं
यथा ॥ केसौदास न्हानु दा ॥५७॥
नु बानु पानु भंग्योगानु गयोग्यानु भयो
ध्यानु धीहि कीसो पाति है ॥ छाडकुरसि
कलोल पहज कवेरह बोल दे षचत ही

115 सवसुषतुमहूं उवारीहैं। ऐसीसौंवसारी
सारीचीरीअतिसेरीसुनैंमरीमरीवा
तनिसुनीकैंहूमैंभरीहैं। ईठनिसोंदूटी
ईठीताकेसोककीआगरीउठीजाकेउरमैं
सुकैसेंहसिडीठहैं।७।अथदुःसंधान
रसलछनदोहा।एकुहोइअनुकूलुजिय
जहांहूजौप्रतिकूलु।केसवदुःसंधानुरसु
सोभनुतहांसमूलु।८।यथा।दैदधिदीनौ
उधारहौकेसवदानुकहूअरुमोललैबेहैं ॥
दीनैंविनातोगईजुगईहोगईनगईघररी
फिरिजैहैं।गोहितुवैरुकियोहितुहोकव
वैरुकियोवरुनीकैंडुरैहैं।वैरुकेंगोरसु
ववकुंगीअहोवेअनवैवोंतोटरिनदैहैं।
॥८॥अथपात्रदुष्टलछनदोहा। जैसोजहां
नवूझियेंकीजेतैसोपुष्ट।विनुविचारजो
वरनियेंसोरसुपात्रदुष्ट।१०।यथा।क
पटक्रिपानीमानीप्रेमरसलपटानीप्रानि
निकौंगंगाजूकेपानीसमपानियें।स्वारथ
निधानीपरमारथकीरजधानीकामकीकहां २२
नीकेसोहासजगजानियें।सुवरनअलकों

र. प्रि. नी सुधा सौं सुधारिआंनी सकैल सयानसा
116 नी मानी सुभ संनियैं ॥ गोरा उगिरा लआनी
॥ ५८ ॥ मोहै मुनि मद्रगपानी अैसी बानी मेरी रांनी
विधु कैवखानियैं ॥ ११ ॥ दोहा ॥ केसव करु
ना हास कै उअरु वीभत्स सिंगार ॥ वरनत
वीरभयान कहि संतत वैरु विचार ॥ १२ ॥
भय उपजै रौ वीभत्स तैं अरु सिंगार तैं हासु ॥
केसव अद्भुत वीर तें करुना कोप प्रकासु ॥
॥ १३ ॥ इहि विधि केसवदास रस अनरस
कहे विचारि ॥ वरनत भक्ति पराजहं क
वि कुल लेहु सुधारि ॥ १४ ॥ जैसैं रसिक
प्रिया विना देखियैं दिन दिन दीन ॥ त्यों ही
भाषा कवि सबै रसिक प्रिया करि हीन
॥ १५ ॥ बाढै रति मति अति पढैं जानै स
वरसरीति ॥ स्वारथ परमारथ लहैं रसि
क प्रिया की रीति ॥ १६ ॥ इति श्री मन ॥ ५८
महाराज कुमार श्री इन्द्रजीत विरचिता
यां रसिकप्रियायां रस अनरस वरननं षो
प्रभाव: डस प्रकास: ॥ १६ ॥ सं १८६५ श्रावणशुक्ला
ति. १२ बुधे शुभम ॥ आत्मपठनार्थं शुभम ॥